RAJBIL26868/2016/1284525
वर्ष 3 अंक 3 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका नवम्बर 2019
पेज संख्या : 36 राजसमंद

दीपोत्सव पूरे शबाब पर है, घाटी में मेंढ़कों का टर्राना बंद होगा

बेटी की अक्षमता ने दिया जीवन को सार्थक बनाने का मकसद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

दीपावली व नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

शक्ति जनरल स्टोर

पाठ्य पुस्तकें, शक्ति कॉपियां, स्कूल व ऑफिस स्टेशनरी, होजरी, कॉस्मेटिक्स एवं जनरल सामग्री हेतु आपकी सेवार्थ समर्पित।

शक्ति उद्योग
शक्ति कॉपियां एवं स्टेशनरी के निर्माता
रेल्वे स्टेशन रोड, कांकरोली राज.
मो. 9413021510

शक्ति एजेन्सीज
पुस्तकों एवं स्टेशनरी के होलसेल विक्रेता
शास्त्री मार्केट, कांकरोली
फोन नं. 02952-222810

अंकुर डेंटल क्लिनिक
रेल्वे स्टेशन रोड, कांकरोली राज.
मो. 9413975510

राजसमंद का उत्कृष्ट उत्पादन - हर विद्यार्थी की पहली पसन्द : शक्ति कॉपियां

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक
विजय शर्मा
सह सम्पादक
हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी
सूर्यप्रकाश दीक्षित
विज्ञापन प्रबंधक
जितेन्द्र शर्मा
गणपतसिंह
वितरण विभाग
नारायण पालीवाल, सुधीर दवे, नरेश पालीवाल

कार्यालय पता
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट
कांकरोली, जिला राजसमंद
मो. 94142-39648, 99500-84705

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता का शुल्क मात्र 200 रुपए

"SHREE"
Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावडिया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101

सम्पादकीय

रहे सदा ज्योति की हामी

जयवर्द्धन पत्रिका परिवार की ओर से सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, शुभचिंतको को दीपोत्सव की शुभकामना। तमसो मां ज्योतिर्गमय के भावो का उद्घोष करने वाली सनातन संस्कृति का यह महापर्व दीपावली गरीब की झोपड़ी से राजघराने की ड्योढ़ी तक अन्तर्मन, तन, धन को उजाले का आलोक भरे। दीपावली का पर्व अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। अन्याय, अत्याचार, अंहकार के दंभ से लबरेज महाबली रावण को परास्त करने के साधारण मानव के रूप में महा प्रयास का नाम है राम। काम, क्रोध, मद, लोभ और मात्सर्य विद्वान् महापंडित रावण को ब्रह्म राक्षस बना देता है, यह त्रेता युग का प्रत्यक्ष उदाहरण है। संगठित बुराई के खिलाफ आम साधारण व्यक्ति कैसे लड़ाई करें और छोटी-छोटी सकारात्मक साधारण ताकतों का एकीकरण कैसे अंहकारी से मुकाबला कर उसे परास्त करे यह है मर्यादा पुरुषोत्तम राम।

आज के हालात को देखते हुए हमारे अपने जीवन और परिवेश में हमें अपने अन्तर्निहित राम और रावण से पग पग पर मुकाबिल होना पड़ता है। पूरे देश परिवेश में अज्ञान, परिग्रह, अतिक्रमण असंवेदना, अस्वच्छता, अकर्मण्यता, असहयोग और असहिष्णुता जैसे कुसंस्कार प्रभाव दिखा रहे हैं, तो लगता है रावण अभी भी जिन्दा है। इन बुराईयों के खिलाफविचार और व्यवहार में संकल्पबद्ध परिवर्तन ही दीपज्योति का संदेश है। हम तो वसुधैव कुटुम्बकम की भावभूमि के वासी है, जिनका सदैव मानना रहा-

तम में नहीं हम जीना चाहते,
रहे सदा ज्योति के हामी।
मानवता है मंजिल अपनी
हम है सच्चे शांति पुजारी।।

दिनेश श्रीमाली
अयोध्यापुरी किशोरनगर
9414176733

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी 1 :** बेटी की अक्षमता ने दिया जीवन को सार्थक बनाने का मकसद — पेज- 4
2. **बदलाव की बयार :** ...घाटी में मेढ़कों का टर्राना बंद होगा — पेज - 8
3. **व्यंग्य :** हैप्पी दिवाली — पेज- 11
4. **व्यंग्य :** थैंक यू गॉड — पेज- 12
5. **चिंतन :** लिव इन रिलेशनशिप खतरे की घंटी — पेज - 14
6. **तीखी मिर्ची :** डिलिट होती रिश्तों की मिठास — पेज - 15
7. **माटी का लाल :** डॉ. माधवलाल पीपलीवाल — पेज - 16
8. **पर्यावरण सुरक्षा :** प्लास्टिक ना बाबा ना — पेज - 23
9. **मेवाड़ी चौपाल :** दिवाळी रा दीवा बळे, म्हाने बी लसमी पळे — पेज - 22
10. **मेरा गांव, मेरे लोग :** श्री कन्हैयालाल ठाकुर — पेज - 27
11. **कविताएं :** जीवन पतंग री डोर, डळ झील आत्मकथा — पेज - 29
12. **चिंतन :** आखिरी अस्पताळ, राजसमंद री पाळ — पेज - 30

बेटी की अक्षमता ने दिया जीवन को सार्थक बनाने का मकसद

विजय शर्मा @ जयवर्द्धन

आज भी अच्छी तरह याद है, जब मेरी पत्नी मां बनने वाली थी। हम बहुत ही खुश थे कि आज हमारे घर पर किलकारी गूंजने वाली है। मन में अलग- अलग सपने हिलोरे मार रहे थे, कभी सोचता बच्चा होगा तो वह मेरे शक्ल से मिलता जुलता होगा। कभी सोचता नन्हीं सी गुड़िया होगी, जिसे मैं जमाने भर का प्यार दूंगा। वो मेरी पत्नी जैसी होगी। इन्हीं सपनों के बीच मेरी खुशी का तब ठिकाना नहीं रहा, जब नर्स ने बाहर आकर बताया कि बधाई हो आपके घर बेटी आई है। यह सुनकर में फूला नहीं समा रहा था। मन में कई तरह के ख्याल आ रहे थे। बेटी के खिलौने से लगाकर उसकी परवरिश और शादी के बाद उसकी विदाई तक के सपने उसी दिन आंखों में तैर रहे थे, मगर यह खुशी तब दुख में तब्दील हो गई, जब कुछ दिनों बाद डॉक्टर ने बताया कि आपकी बेटी को सेरेब्रल पालसी (CP) नामक बीमारी है, जिससे इसका शारीरिक व मानसिक विकास बहुत मंद गति से हो पाएगा।

यह कहानी है राकेश परियाणी की, जिनकी बेटी सुरभि परियाणी की शारीरिक अक्षमता ने इन्हें कुछ अलग कर गुजरने का मकसद दे दिया। अपनी बेटी के साथ ही इसी तरह की बीमारी से पीड़ित अन्य बच्चों के दर्द को भी अपना दर्द बना लिया। सेरेब्रल पालसी व मुक बधिर बच्चों के लिए इन्होंने निशुल्क विद्यालय प्रारंभ किया और कई इसी तरह के बच्चे जिन्हें उनके परिजन घर में सांकलों से बांध कर रखते थे। उन्हें सलाखों से मुक्त कराकर अपने आवासीय विद्यालय में निशुल्क शिक्षण देकर आम इंसान की तरह सम्मान जनक जीवन प्रदान किया।

आज यहां करीब सौ अक्षम बच्चे अध्ययनरत है, जिनमें करीब तीस बच्चे आवासीय है। भारत से पाकिस्तान के बंटवारे के बाद पाकिस्तान में हिन्दू असुरक्षित हो गए, तो भारत में आ गए। इनमें राकेश के पिता भोजराज परियाणी भी अपने भाइयों सहित इंदौर आकर रूके और बाद में राजसमन्द आकर बस गए। भोजराज

परियाणी के पांच पुत्रों में राकेश सबसे छोटा है।

अनिता के संग राकेश की शादी के एक वर्ष बाद 11 मई 1996 को बेटी सुरभि का जन्म हुआ। तब जन्म के तुरंत बाद उसे रोना नहीं आ रहा था, तो नर्स ने अलग अलग तरीके से उसे रूलाने का प्रयास किया और जब कुछ समय बाद उसने रोना प्रारंभ कर दिया तो ऐसी रोई कि फिर रूकने का नाम नहीं ले रही थी। जब दो घंटे बाद तक भी वह रोना बंद नहीं कर रही थी तो डॉक्टर को दिखाया, तो उन्होंने तो उसे कंपोज दिया।

उसके बाद उसने रोना बंद कर दिया। तीन महीने बाद अस्वस्थ होने के कारण जब उदयपुर के महाराणा भुपाल चिकित्सालय में एक डॉक्टर को बताया, तो उन्होंने कहा कि जन्म के समय दिए गए कम्पोज के कारण इसका शारीरिक विकास बहुत धीरे-धीरे होगा। तब सबने इस बात को सहज में लिया कि जहां बच्चा छह महीने में बैठना सीखता हैं, तो हो सकता है इसे एक साल लगे, मगर डेढ़ साल के बाद उसने बैठना सीखा। शारीरिक विकास बहुत धीमी गति से होने पर राकेश और अनिता को बेटी की चिंता सताए जा रही थी, तब किसी ने कहा- चित्तौड़गढ़ जिले में आवरी माता मंदिर ले जाने से सुधार होगा, तो किसी ने बडे डॉक्टर को मुंबई दिखाने की सलाह दी। राकेश ने हर बार अपनी नौकरी से छुट्टी लेकर बेटी के बेहतर स्वास्थ्य की कामना में कई प्रयास किये। जैसा कि सब जानते हैं कि सिंधी समाज हमेशा संघर्षशील रहा है।

इनके पुरखों ने पाकिस्तान और भारत के बीच आकर अपनी जिजीविषा के बड़े संघर्ष को झेला है। बड़े से बड़े संकट का सामना करने का जज्बा इनके खून में मौजूद रहता है। राकेश ने अपनी बेटी की अक्षमता पर कभी किसी डॉक्टर या भगवान को भी दोष नहीं दिया और इसे अपने जीवन को मूल्यवान बनाने का अवसर बना लिया। अपनी बेटी को लेकर जब दिल्ली एम्स में गए, तब असली बीमारी का पता चला कि इसे सेरेब्रल पालसी नामक बीमारी है। डॉक्टर ने बताया कि जन्म के तुरंत बाद दिमाग के अनेक टिस्यू तक पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं पहुंचने से यह बीमारी होती है। वो टिस्यू कुछ समय बाद ऑक्सीजन के अभाव में डेड हो जाते हैं, जिसका बाद में कोई भी पुख्ता इलाज संभव नहीं हैं। ऐसे मरीज को थेरेपी व लगातार एक्सरसाइज से फायदा मिलता है और इन बच्चों को अलग तरीके से पढ़ाया जाता है। राकेश ने अपनी बेटी को दिल्ली के बाद उदयपुर में पता किया कि कोई संस्था जहां इसकी शिक्षा और इलाज संभव हो।

तब उदयपुर की प्रयास संस्था से संपर्क हुआ, जहां रोज सुबह सात बजे से ग्यारह बजे का समय तय हुआ। अपनी नौकरी में बड़ी मुश्किल से द्वितीय शिफ्ट कराकर अब रोज सुबह पांच बजे उठकर छह बजे उदयपुर जाना और वापस एक बजे आते ही जेके टायर इंडस्ट्रीज में ड्यूटी पर जाना प्रारंभ किया, तो ड्यूटी से रात साढ़े दस बजे आने के बाद सोते सोते रात की 12 बज जाती थी। लगातार घड़ी की सुई के साथ भागने के बाद राकेश बेहद थक जाता था, मगर उनकी बेटी का प्यार था, जो उन्हें हर तरह के संघर्ष को झेलने की शक्ति प्रदान करता था। लगातार पन्द्रह दिन की इस संघर्ष पूर्ण दिनचर्या के बाद उन्होंने प्रयास संस्था वालों को ही राजसमन्द आने का आग्रह किया, जिससे राजसमंद के अन्य पीड़ित बच्चों को भी फायदा मिल सकें। आखिर अत्यधिक मनुहार के बाद प्रयास संस्था वाले प्रत्येक रविवार को राजसमन्द आने को राजी हो गए।

इधर इन्होंने राजसमन्द में इसी तरह के पीड़ित बच्चों से संपर्क किया। फिर डॉ. राकेश तैलंग, डॉ. विजय खिलनानी, नरेंद्रसिंह कच्छवाहा, प्रकाश मूलचंदानी, प्रकाश परियाणी, अरुण जैन, दिलीप मल्होत्रा के सहयोग से **द्वारकेश अक्षम सेवा संस्थान** का 18 मार्च 2004 को गठन किया। इस बैनर तले पेम्पलेट व अखबार के माध्यम से भी प्रचार प्रसार कर रविवार के दिन शिविर आयोजित किया। इस पर पहले ही शिविर में करीब 75 बच्चे पहुंचे, जिनमें से ज्यादातर बच्चे मुक बधिर थे। कुछ बच्चों को तो परिजनों ने मजबूरन सांकलों से बंधक बना कर रखे हुए थे। क्योंकि कई गरीब मां-बाप रोजमर्रा के काम से घर निकल जाते हैं। ऐसे में अगर बच्चा कहीं चला जाए, तो उसे तलाशना बड़ा मुश्किल है। जैसे ही इस तरह के शिविर में ऐसी शिक्षा व इलाज के बारे में सुनकर परिजन भी उत्साहित होकर बच्चों को लेकर आ गए। चूंकि ज्यादातर बच्चे गरीब परिवारों से होने से शिविर का आयोजन नि:शुल्क ही रखा गया। इसमें फिजियाथैरेपिस्ट भी आते थे, जिससे सीपी पीड़ित बच्चों को थैरेपी भी करवाते थे। खास तौर से शिक्षक जगदीश के प्रयास से श्रवण बाधित व दृष्टि बाधित बच्चों को काफी फायदा मिला।

राजसमंद में साप्ताहिक शिविर नियमित लगने लगा, मगर बच्चों के लिए सात दिन में से सिर्फ एक दिन दी जा रही शिक्षा व उपचार पर्याप्त नहीं था। ऐसे में प्रयास संस्था के सहयोग से उत्तरप्रदेश के विशेष प्रशिक्षक रामदास पाल से संपर्क हुआ, जो मात्र 6 हजार रुपए मासिक वेतन पर बच्चों को पढ़ाने के लिए तैयार हो गए। इस तरह शिविर को विद्यालय के रूप में विकसित किया। प्रशिक्षक रामदास के कारण अक्षम बच्चों में आश्चर्यजनक सुधार होने लगा। 15 बच्चों से शुरू हुए विद्यालय में दिनोंदिन संख्या बढ़ने लगी। फिर बच्चों के लिए मात्र 100 रुपए मासिक शुल्क तय किया, तो कई परिजनों ने बच्चों को भेजना ही बंद कर दिया। ऐसे में उन बच्चों का दर्द देखा नहीं गया, तब सभी बच्चों के लिए प्रवेश नि:शुल्क करते हुए वापस बुलाया गया।

वर्ष 2004 में ही जिला कलक्टर को पत्र देकर विद्यालय के जमीन आवंटन की मांग की गई। साथ ही अक्षम बच्चों की शिक्षा के लिए समाज कल्याण विभाग को भी पत्र दिया गया। इसी तरह 2004 से 2006 तक मार्बल व्यवसायियों को भी आर्थिक सहयोग के लिए पत्र

जयवर्द्धन नजरिया

अक्षम चेहरों को इंतजार सक्षम भामाशाह की

आखिर किस गुनाह की सजा में परमात्मा ने हमें यह असामान्य जीवन दिया और कुछ कमी रह गई तो खुद जन्मदाता ने हमें रस्सी से बांध दिया। हम बेजुबान अपना दर्द भी किसी से कहने लायक नहीं है। आखिर हमें क्यों नहीं नसीब होती हैं हमारे हिस्से की वो खुशी? शायद कभी सपनों के देश से कोई फरिस्ता ही जमीं पर उतरे जो हम मासुम बालकों को इस कष्टमय जीवन से मुक्त करा सकें। हम आम बच्चों की तरह कह सकें, वो अनकही कहानी जिसे बरसों से किसी ने नहीं सुनी और हमारे जेहन में दबी हुई है, हम भी उड़ा सके मुक्त गगन में कोई पतंग और खेल सके मोहल्ले के बच्चों के साथ वो सब खेल जो अक्सर खिड़की के कोने से वो खेलते हुए दिखाई देते हैं। जिस तरह बच्चे हंसते हुए बात करते हैं, काश वो मुक्त हंसी हमें भी नसीब हो। इस तरह एक रस्सी की कैद में जकड़ा हुआ बच्चा शायद यही सब कुछ सोचता होगा। ज्यादातर सामान्य बच्चों के बीच वह हंसी का पात्र बनकर रह जाता है। ये बच्चे अन्य बच्चों की तरह हंस खेल भी नहीं सकते हैं, न ही बोलकर अपनी भावना प्रकट कर सकते हैं। एक घर में बच्चे का जन्म बेहद खुशी का मौका होता है। घर के प्रत्येक सदस्य की उत्सुकता छोटे से बच्चे को लाड प्यार करने की बनी रहती है, मगर वह बच्चा बदकिस्मती से यदि मानसिक कमजोर हुआ या मुक बधिर होने की स्थिति में खुद बच्चे का जीवन तो कष्टमय होता ही है। साथ ही उनके पालकों का जीवन भी संघर्षमय हो जाता है। आम बच्चों से अलग ऐसे बच्चे बड़े ही अवसाद ग्रसित होते हैं, वहीं उनके मां- बाप भी संतान की चिन्ता में एक तनाव में जीते हैं। इन बच्चों की परवरिश में बड़ी मुश्किल का सामना करना पडता हैं। कई बच्चे जो घर से कहीं निकल जाते है, तो उनको ढूंढना बड़ा मुश्किल हो जाता हैं, इसलिए मजबूरन कई बच्चों को उनके संरक्षक रस्सी से बांधकर या कमरे में कैद करके रखते हैं। इन सबके दर्द को यदि हम महसूस करें तो हमारी रुह कांप जाती है। इन्हीं बच्चों के दर्द को अपना दर्द बनाकर श्री द्वारकेश अक्षम सेवा संस्थान के जाग्रति विद्यालय ने इन बच्चों को जीवन की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास किया है। इस विद्यालय में पढ़ने के बाद ऐसे ही कई बच्चे न सिर्फ अपने मन की बात इशारे या उनकी अपनी भाषा में बताने लगे, बल्कि शारीरिक, मानसिक रूप से भी सक्षम होने लगे हैं। राकेश परियाणी के सन् 2006 से शुरू हुए लम्बे संघर्ष के बाद सरकार ने 2012 में जमीन तो दे दी। मगर भवन के अभाव में अब तक बच्चे छोटे से किराए के भवन में पढ़ने को मजबूर है। इन मासुम चेहरों को इन्तजार हैं, उन भामाशाह का जो इनका विद्यालय भवन बनाकर इनके हिस्से की खुशियां दिलाने मदद कर सकें। जिससे शिक्षा की कूची से इनके बैरंग जीवन को नए खुशबू भरे सतरंग मिल सके।

भेजे गए। सबसे पहले प्रेम गौड़ (किरण मार्बल) ने 51 हजार रुपए दिए, जिससे श्रवण बाधित मशीन व बच्चों के लिए पजल्स खरीदे गए। फिर तनसुख बोहरा, फतहचंद सामसुखा, प्रमोद मोदी सहित 15 व्यवसायियों ने मिलकर करीब 65 हजार रुपए प्रदान किए। संस्था में आर्थिक तंगी के दौर में दो चार माह तक का वेतन अटकने के बाद भी रामदास पाल नियमित बच्चों को पढ़ाते रहे और उनके अभिभावकों को प्रेरित व प्रशिक्षित किया। कुछ अभिभावक भी स्कूल में नियमित पढ़ाने लग गए थे। फिर पढ़ाने वाले अभिभावकों को स्कूल के समय में बांधने के लिए 500 रुपए अल्प वेतन तय किया गया। वर्तमान में 92 मानसिक विमंदित व मुक बधिर बच्चों को 19 शिक्षक- शिक्षिका द्वारा पढ़ाया जा रहा है।

जमीन मिली, पर भवन की दरकार

काफी संघर्ष के बाद आखिर वर्ष 2012 में तत्कालीन जिला कलक्टर ओंकारसिंह द्वारा हाइवे आठ किनारे राजनगर में एक बीघा जमीन का आवंटन किया गया। इसमें से नौ हजार स्क्वायर फीट नि:शुल्क व शेष जमीन डीएलसी दर पर आवंटन हो गया, मगर बजट के अभाव में आज भी भवन का निर्माण नहीं हो पाया और वर्तमान में स्कूल किराए के भवन में चल रहे हैं। एक दौर ऐसा भी आया था कि दो तीन मार्बल कारोबारियों ने संस्था के लिए व्यवस्थित भवन बनाने की जिम्मेदारी भी ली और उन्होंने कुछ प्रयास भी किए, मगर संस्था के भवन का

सपना साकार नहीं हो पाया। इधर, जेके टायर इंडस्ट्रीज द्वारा दो कमरे, एक लेट- बाथ का निर्माण करवा दिया है, जबकि एक कमरा सुशील परियाणी, एक कमरा श्री बाबूलाल कोठारी (केलवा), एक कमरा स्व. भोजराज- लाजवंती परियाणी की स्मृति में निर्माणाधीन है। फिर भी वर्तमान की छात्र संख्या के आधार कम से कम 15 कक्षा कक्षों की जरूरत है।

पढ़ाई के बाद आत्मनिर्भरता की कमी खली

अक्षम सेवा संस्थान की ओर संचालित जागृति विद्यालय से 10-10 बच्चों को 12वीं उत्तीर्ण करवा दी गई, मगर वे आगे आत्मनिर्भर नहीं बन पाए हैं। इसको लेकर संस्थान अब उन्हें स्वरोजगार दिलाने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही इंदौर में एक रेस्टोरेंट है, जहां सभी बच्चे विमंदित ही कार्य कर रहे हैं। ठीक वैसा ही रेस्टोरेंट खोलने या अन्य रोजगार तलाशने के प्रयास जारी है।

राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर मिला सम्मान

अक्षम बच्चों के शिक्षण के साथ खेल व सांस्कृतिक गतिविधियों में बेहतर प्रदर्शन कर राजसमंद जिला स्तर के साथ राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर भी परचम फहराया। इस संस्थान को बेस्ट इंस्टीट्यूट ऑफ राजस्थान एवं सुरभि को सर्वश्रेष्ठ प्रेरणास्त्रोत के रूप में राज्य स्तर पर सम्मानित किया गया। अन्य बच्चों ने भी खेल व सांस्कृकि स्पर्द्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर संस्थान को सम्मान दिलाया।

संकलन सहयोगी : नीलेश पालीवाल, कांकरोली

दीपोत्सव पूरे शबाब पर है, घाटी में मेंढ़कों का टर्राना बंद होगा

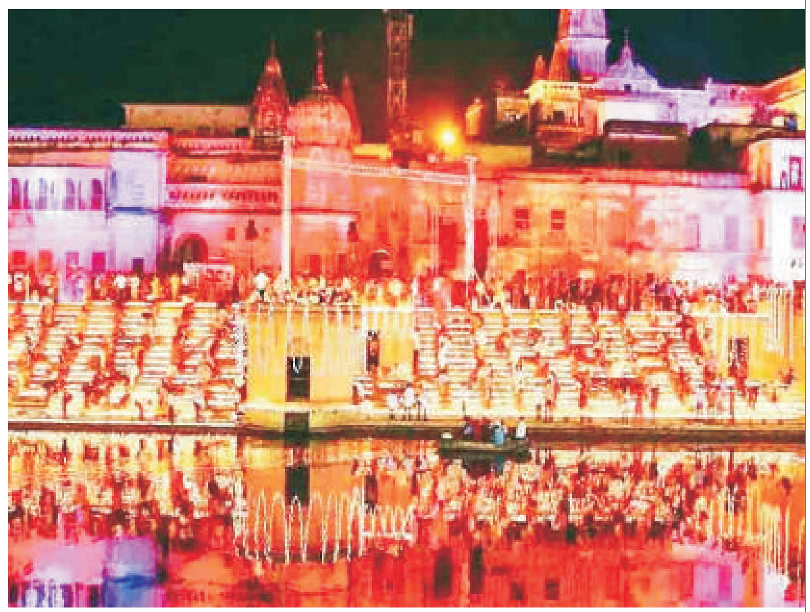

राम जन्मभूमि और बाबरी मस्जिद विवाद का पटाक्षेप आजकल में होने वाला है। सम्माननीय न्यायालय का जो भी निर्णय होगा, वह देश को मान्य होगा। आम आदमी और सामान्य जीवन की इस निर्णय को लेकर उत्सुकता अवश्य है, लेकिन यह उत्सुकता संयत और शालीन रही है। आशा है, आगे भी बनी रहेगी। लेकिन राजनीतिक हलकों में कुछ बेचैनी है। पता नहीं ऊंट किस करवट बैठे। सर्वाधिक चिंतनीय स्थिति है तो उन धर्मांध प्रवृत्तियों की, जिन्होंने सदा की तरह विवेकहीनता और संवेदनहीनता का परिचय दिया है। संगठन विशेष के नेता की जघन्य हत्या को विवेकी समुदाय इसी रूप में लेते हैं। यह दीपावली को बेस्वाद करने का और राष्ट्रीय मुद्दों से ध्यान हटाने, माननीय न्यायालय के फैसले के प्रति अविश्वास और निर्णय को टालने के असफल कृत्य के रूप में है। देखना भर है, क्या होने वाला है ? 17 नवम्बर, 2019 कौनसी दूर है ?

खैर, निर्णय जो भी हो, वह माननीय न्यायालय का रहेगा। दीपोत्सव की स्वर्णिम आभा की तरह ही वह निर्णय भी जाति पंथ और समुदाय से ऊपर उठकर होगा। सबके लिए स्वीकार्य होगा।

पाकिस्तान ने अपनी पूरी एड़ी चोटी का जोर लगा लिया। अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर मुंह की खा जाने के बाद तिलमिला गया है। अब वह पागल कुत्ते की तरह मुंह खोले और लार टपकाते फिर रहा है। वह काटता है और पिटाई खाता है। कश्मीर में आतंकवाद की घुसपैठ कराना और माहौल बिगाड़ने का उसने कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दिया। गोलीबारी करता कराता है। नागरिकों और बच्चों को भी वह नहीं छोड़ता और उन्हें भी निशाना बनाता है। सैन्य बलों पर घात लगाता रहता है। कई जवान उसके पाप की भेंट चढ़ रहे हैं। हमारे लिए वे शहीद हैं। जिनके जाने पर पूरा देश शोक संतप्त होकर श्रद्धांजलि देता है। सम्पूर्ण समुदाय निजता से ऊपर उठाकर पहले भारतीय बनाता है। संकल्प करता है। पाकिस्तान को जवाब देता है। पाकिस्तान में आतंकवादी गढ़ ढहा दिए हैं।

आतंकियों के साथ उनके सैनिक भी मरते है, जिन्हें पाकिस्तान स्वीकार ही नहीं करता। कुछ बेशर्म भारत में भी सबूत मांगने से नहीं चूकते। बेशर्म पाकिस्तान को इस दीपावली को कुछ रोशनी भेजी जाए। वह बेकार की हरकतें बंद करें। एटम बमों की धमकी देने से बाज आए। मूल्यों को समझे। पाकिस्तान के अवाम को रोजी रोटी देकर मानवीय मूल्यों को बढ़ाने का अवसर दें। वह विस्तारवादी ताकतों के हाथों खिलौना नहीं बने। इसी में उसकी भलाई जो है।

दीपावली हमें जागने का संदेश दे रही है। यह जाग हमें दायित्व के प्रति सजग करती है। देश की आंतरिक उठा पटक चलती रही है। आगे भी चलेगी। लोकतन्त्र में कोहनी के शहद लगाने का चलन है। यह षडयंत्रों का हिस्सा भी है। उठा पटक जो भी सकारत्मक हो। देश को एक सूत्र में पिरोने वाली हो। राष्ट्रीय.योजनाओं की क्रियान्विति यदि सब के विकास में है, तब उसकी समालोचना होनी चाहिए। न किए आलोचना के लिए आलोचना। इससे देश की सामूहिक शक्ति कमजोर होता देखा गया है। संगठन भार भाराता है। व्यर्थ का उद्वेलन जिसे हम हिंसा, घेराव और हड़ताल के रूप में देखते हैं। यह सभी प्रवृत्तियाँ विरोध की स्वरूपा हैं। इन्हीं की वजह से देश के प्रगति का चक्र थम सा जाता है। सीधे सीधे देश को आर्थिक नुकसान से गुजरना होता है, जिससे हम डीडबल्यूएसएच के साथ साथ पिछड़ते हैं। आज युद्ध आर्थिक व्यवहार के स्तर पर लड़ा जाता है। जो देश जितना समृद्ध होगा, वह उतना ही सुरक्षित होने का भरोसा रख सकता है। मार काट, गोलीबारी, आतंक, आत्मघात और भयभीत करना–कराना अतीत की बातें हैं।

चीन बिजनेस कॉरीडोर बनाकर आर्थिक संपन्नता से विश्व विजय ही तो प्राप्त करना चाहता है। भारत भी होड़ाहोड़ी में उसका बराबर जवाब दे रहा है। यही शुभ है। हम उस आर्थिक युद्ध का जवाब देने के लिए देश के हाथ मजबूत करें। इसके लिए जरूरी है कि हम विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ उत्पादन करें। उत्पादक के साथ निर्यातक बनें। आंतरिक शोशेबाजी से उबर कर विश्वमंच पर लाभ में हिस्सेदारी करें। यही दीप पर्व की सार्थकता है। प्रकाश पर्व का आधार दीपक है, जो कि प्रकाश वितरित करता है। वही विजय का कारण भी होता है। देश के प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं को भारत मान लेना होगा। वह स्वस्थ और समर्थ बने। व्यक्ति का स्वास्थ्य ही देश को मजबूती देता है।

योग भारत का उत्पाद है, जिसे विश्व स्वीकार कर शारीरिक और आर्थिक दृष्टि से समर्थ बन रहा है। अमेरिका में कई भारतीय इंजीनियर कंप्यूटर चलाने के लिए गए। अब वे वहां योग स्टूडियो चालकर डॉलर उलीच रहे हैं। कई विदेशी जन ने योग को आधुनिक स्वरूप देकर यश के साथ साथ अर्थ भी साध लिया है। योग के साथ साथ खेलों की तरफ हमारा रुझान देश के स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। ये हमारे में प्राणों का स्वस्थ संचार करते हैं, जिससे ही हम दीपक की तरह आलोकित होकर परिवार, समाज और देश के लिए महत्वपूर्ण बन सकते हैं।

स्वास्थ्य का आधार स्वच्छता है। महात्मा गांधी के स्वावलंबन के सिद्धान्त में स्वच्छता और सुस्वास्थ्य को प्रथम सीढ़ी के रूप ही देखा जाना गया है। स्वच्छता स्वास्थ्य का आधार है। स्वास्थ्य विकास का आधार है। विकास के लिए मानसिक शक्ति और निर्णय क्षमता जरूरी है। ये आत्मबल से प्राप्त होते हैं। आत्मबल का आधार स्वच्छता, स्वास्थ्य और आत्म निर्भरता है। दीपावली हम को अंदर बाहर मानवीय मूल्यों और आत्मशक्ति से सम्पन्न करेगी।

भारत देश जीओ और जीने दो की सोच रखता है। कश्मीर और लद्दाख से धारा 370 हटाकर, विकास करने की पहल को सबका साथ और सबके विकास में लेना ही उचित है। कुछ ढपोरी बेतुका राग अलापते हैं। यूरोपीय संघ के 27 सांसद घाटी पहुंच गए हैं। यह भारतीय राजनीति की सकारत्मक पहल है। आशा है यूरोपीय संघ के माध्यम से हमारे देश द्वारा, विश्व को शीघ्र ही शुभ संदेश मिलेगा। बरसात बीत गई है। दीपोत्सव पूरे शबाब पर है, घाटी में मेंढको का टर्राना बंद होगा। इति शुभम।

त्रिलोकी मोहन पुरोहित
अकादमिक निदेशक सोफिया पब्लिक स्कूल
शाति कॉलोनी, कांकरोली राजसमंद
9414174179, 8094531111

नाथद्वारा में मनोरंजन के लिए अच्छे दिन, मिराज समूह के गृह नगर में 121वीं स्क्रीन से पर्दा उठा

नाथद्वारा. भारत के प्रमुख व्यापारिक समूह मिराज ग्रुप ने अपने मल्टीप्लेक्स शृंखला को बढ़ावा देते हुए मिराज सिनेमाज का अपने गृह नगर नाथद्वारा में मनोरंजन के अच्छे दिन लाया है। जहां इसने मिराज मेरिडियन मॉल में दो मल्टीप्लेक्स स्क्रीन का शुभारंभ किया। इससे नाथद्वारा के साथ राजसमंद में रहने वाले फिल्म पारखी लोगों के लिए मिराज सिनेमाज पहले मल्टीप्लेक्स अनुभव के लिए गेट खोलने के लिए अपने घरेलू मैदान पर आया है। इस अवसर पर मिराज ग्रुप के वाइस चेयरमैन मंत्र राज पालीवाल ने कहा कि आज पूरे मिराज परिवार के लिए यह खुशी का क्षण है कि वह नाथद्वारा शहर के लोगों को सर्वश्रेष्ठ इन क्लास फिल्म देखने का अनुभव प्रदान कर रहे हैं।

बताया कि इनका मुख्य उद्देश्य फिल्मों को देखते हुए ग्राहकों के लिए संतुष्टि सुनिश्चित करना है। सामाजिक सांस्कृतिक स्तर पर हमारे दर्शकों के लिए मल्टीप्लेक्स के प्रति प्रतिबद्धता और जुनून ही गहरी भावना हमें प्रेरित करती है। नाथद्वारा के मिराज सिनेमाज की नई की नई प्रस्तुति में 320 लोगों के एक साथ बैठने की व्यवस्था है, जिसमें अपने संरक्षक के लिए शानदार मूवी देखने का

अनुभव प्रदान करने वाली सीटें शामिल है। मिराज सिनेमाज के प्रबंध निर्देशक अमित शर्मा ने उनकी विस्तार योजना पर टिप्पणी करते हुए कहा कि वास्तव में राष्ट्रीय मल्टीप्लेक्स ऑपरेटर के रूप में हमने पूरे देश में अपने विकास पथ पर तेजी से नजर रखी है। अपनी तेजी से विस्तार की योजनाओं के साथ उम्मीद करते हैं कि मिराज सिनेमाज़ का विकास बहुत तेजी से होगा और 2020 तक 200 स्क्रीन वाले मील के पत्थर को छूने में सक्षम होगा। वर्तमान में मिराज सिनेमा 13 राज्यों में 33 शहरों में और 44 मल्टीप्लेक्स में 121 स्क्रीन है।

Spread Love

Dear Reader

India is a land of divine science where there is logic behind everything if we talk about its delicious food, seasons, singing, dancing and so the festivals & celebrations. But if we imagine a life without festivals the result will be definitely horrible where we can see puzzled people fighting with each other or perhaps pulling their own hair, not to get anything from anyone but to seek a life having happiness & peace.

The Indian festivals, knocking our doors one after one has the science and logics of getting us free from our daily monotonous work, stress, tension and to enjoy with our loving ones, having joy and fun in the name of festivals and to instil the new energy level within us, to move ahead with enthusiasm and to live a life with a happy heart & cheerful face.

In earlier time people were not so busy so it was easy for them to enjoy the festivals and today the life is so hectic & miserable that it is must for us to celebrate festivals. Almost everybody is reciting the same dialogue today that they have no time, no time for sitting with the known ones, no time to explore new relations, not time to try a new recipe in the kitchen, no time to talk other than meeting agenda, no time to play with kids and no time for day-to-day talks. And obviously why to give time to all these when we know, won't get any profit. We have thousands of friends on social media and end number of contacts in contact list and WhatsApp groups where we simply forward the message having ornamental language full of emotions & copy-paste it to wish all. On late evening we post some smiling selfies or photographs on face book and then will keep on checking how many likes and comments are there. Is this the celebration of festival? Is selfie showing our inner happiness? Is an ornamental message convey the actual feelings?

Utsav comes along with excitement and it gives us happiness but it can be gained only through our involvement in whatever we do or it would be simply a burden. Let's celebrate this Diwali in a new way and make it memorable for all.

Dear friends, happiness is something which born in our heart by seeing somebody happy because of us or our efforts & so it reflects on our face as real smile. Let's contribute to make someone's Diwali happy this time by keeping a small budget for underprivileged families, visit them and gift them sweet box/crackers/clothes or anything what you feel okay to make their festive happy and the smile you will get in return will make your day I am sure.

"Spread Love & Spread Happiness"

Wish you spend a quality time with your loving ones, enjoy the festival and instil great enthusiasm & new energy level. May this festival fill your life with divine happiness and joy forever. May this time mark a life time memories and May Almighty bless you a healthy and happy life ahead.

Wishing you a happy festive time.

Manisha Lashkari
Principal
Smart Study International School
Nathdwara

हैप्पी दीवाली

पूरा भारत देश रोशनी में नहाया हुआ था। दीपों की लड़ियां सितारों से होड़ कर रही थी। घरों को साफ कर फेंके गए कचरे के ढेरों पर भी दीपक जगमगा रहे थे। मकानों की दीवारों के कपोल चमक रहे थे। दरवाजों के अधरों को विभिन्न रंगों से सज्जित किया गया था। घर- घर लक्ष्मी जी के स्वागत के भव्य आसन सजाए गए थे और उन्हें एक कोने पर भूत मनभावन सुत गजमुख धारी गणपति जी के लिए भी किंचित स्थान रिक्त रखा गया था। अब इतने मान पान से कोई बुलाए, तो कौन नहीं आएगा भला? देवता तो भाव से ही संतुष्ट होते हैं। गजानन खूब सजधज कर लक्ष्मीजी के पास जाकर बोले-आन्टी! चलिए भक्तगण प्रतिक्षारत हैं और उनके प्रसाद की खुशबू मेरी नाक में खुजलाहट पैदा कर रही है। अब मेरे पेट के अंदर तथा बाहर दोनों जगह चूहें कूद रहे हैं। लक्ष्मीजी हंसकर बोलीं- भतीजे थोड़ा और अंधेरा होने दो, फिर चलते हैं मेरे वाहन (उल्लू) की हेड लाइट्स (आंखें) अंधेरे में ही खुलती हैं तथा कहीं भूल हो गई तो भारत में हैवी चालान का भी खतरा है, इसलिए सावधानी बरतनी होगी। गणेशजी अपनी नासिका ऊपर उठाकर हंसने लगे।

थोड़ा अंधेरा गहराते ही एक सेठ के पोर्टिको में अपने अपने वाहन (चूहा और उल्लू) पार्क कर गणेशजी, लक्ष्मी जी घर में प्रवेश कर गए। दिमाग पर जोर मत दीजिए लक्ष्मी सेठों के यहां जाएंगी, फकीरों के यहां नहीं, क्योंकि कहते हैं लक्ष्मी लक्ष्मी को घसीटती है। इधर चूहा आदतन उल्लू की दुम कुतरने लगा, घुग्घू ने घुड़कते हुए कहा कि यह मेरी दुम है लड्डू नहीं। दुष्ट इसे छोड़ दे नहीं तो एक पंच लगाऊंगा। चूहा चूं-चूं कर बोला-काकू! नहीं ऐसा मत करना। हमारे मालिक और आपकी मालिकिन तो हमें छोड़कर चले गए हैं। मैंने सोचा कि कुछ टाइमपास किया जाए, अब हम आदमियों की तरह मोबाइल में तो आंखें गड़ा नहीं सकते हैं कि पास खड़े व्यक्ति का भी आभास न हो। मोबाइल को समय 'उड़नछू यंत्र' कहना चाहिए, क्योंकि हाथ में मोबाइल लेते ही कब घड़ी के कांटे चक्कर काट लेते हैं, पता भी नहीं चलता है। उल्लू ने एक डरावनी घुड़की साथ सहमति देकर कहने लगा- तुमने सच कहा पर टाइमपास करने के और भी साधन हैं। पूंछ की ऐसी तैसी करने की क्या आवश्यकता थी? मुझे क्या निरा उल्लू समझा है क्या? चूहा भी सहमकर बोला-और भी साधन? मैं समझा नहीं। उल्लू ने आंख दिखाकर चिल्लाया- 'लोग मुझे ख्वामख्वा उल्लू कहकर बदनाम करते हैं, सबसे बड़ा उल्लू तो तू है, जो सबकुछ देखकर अनजान बनता है। कितने मुद्दे हैं टाइम पास के। तुझे मेरी पूंछ ही मिली थी? एक तो मेरी ऐसे ही पूछ नहीं है, तू मुझे पूंछ कटा बनाकर मेरी रही सही साख को भी मिट्टी में मिला रहा है।'

चूहे ने मुस्कुरा कर कहा- अरे सीनियर सिटीजन इतना एंग्री मत होइए। मैं आपकी तरह बुद्धिमान नहीं हूं, क्योंकि जम्बूद्वीप के भारतखंड में लक्ष्मी को पाकर उल्लू भी जुगाड़ू महाज्ञानी हो जाते हैं। इस भूमि में ऐसी प्रजाति सदियों से रही है। कृपा कर उन मुद्दों के विषय में विस्तार से बताइए तथा संशय का उसी प्रकार कीजिए, जैसे कागभुशुण्डि ने गरुड़ का किया था। इतना सुनकर उल्लू गदगद हो गया, क्योंकि उल्लुओं को टांग खिंचाई भी अपनी बड़ाई लगती है। मूंछों पर पंचे फेरकर बोला- मूसक बेटा टीवी देखा करो, तो टाइम पास के नए- नए मुद्दे मिलेंगे।

देश आर्थिक मंदी के दौर से गुजर रहा है। बेरोजगारी बेतहाशा बढ़ रही है, पेट्रोल- डीजल निरंतर उछल रहे हैं, किसी को भी अपराधी समझकर भीड़ द्वारा सजा-ए-मौत दी जाती है। नौकरी के लिए बेरोजगार युवा जी जान लगाकर विभिन्न टेस्ट पासकर नियुक्ति हेतु न्यायालय की ओर टकटकी लगाए हुए हैं। सब्जियां आसमान को चूम रही हैं, रेलवे का निजीकरण हो रहा है, दिन दहाड़े खूंरेजी, रेप, जालसाजी के मामले हो रहे हैं। चाइना से व्यापारिक समझौते किए जा रहे हैं, दूसरी ओर चीनी सामानों के बहिष्कार का राग अलापा जा रहा है। ऐसे मुद्दों पर बातचीत करो, तो टाइम पास होगा। साथ ही साथ शायद कुछ हल भी निकल आए। चूहा चुपके से बोला- इन सब मुद्दों पर बात उल्लू करते हैं। हमें जब घी के तर मोदक मिल रहे हैं, तो हम काहे बेमतलब सिर खपाएं?

इतने में सेठ के घर में पंडित जी ने पूजा समाप्ति का शंख बजाया और लक्ष्मी- गणेश जी बाहर निकलकर अपने अपने वाहन पर सवार हो, दूसरे बड़े घर की तरफ चल दिए। चूहे ने कनखियों से उल्लू को देखकर धीमे से कहा- दुनिया की चिंता छोड़ो डूडए से ओनली हैप्पी दीवाली।

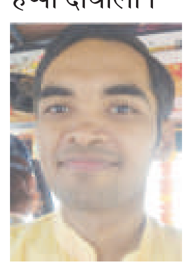

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग जगद्गुरु रामभद्राचार्य
विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उत्तरप्रदेश
मो. 86041-12963

थैंक यू गॉड फॉर सेइंग, आमीन

म्हारे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई,
माई छोड्या छोड्या बंधू छोड्या, छोड्या सागा सोई।
साधो संग बैठ बैठ लोक लाज खोई।

प्रभु अब तो ये गाना भी रिस्की हो गया है। पता है, आपको मैं ये गाते हुए घूम रही थी, तो बहुत से टोपी धारियों ने मुझे घेर लिया। कोई घड़ी दिखा रहा था, तो कोई साइकिल पर मेरे पीछे दौड़ रहा था। एक मैडम तो हाथी पर आकर मेरे सामने खड़ी हो गई। कुछ लोगों ने आशीर्वाद की मुद्रा में मेरा अभिवादन किया, तो कुछ बलात मुझे कमल पर बैठाने लगे। कोई हंसिया से डरा रहा था, तो कोई तीर कमान चला रहा था। और इंजन की आवाज़ से तो मेरा सर ही चकराने लगा था। सब मुझे अपनी अपनी ओर खींच रहे थे।

परेशान होकर मैंने पूछा– क्यों कर रहे हैं, आप यह क्रूरता मेरे साथ। तो हाथ जोड़ते हुए वे बोले मीरा बाई आप इसे क्रूरता समझ रही हैं। अरे! हम तो आपको कुर्सी पर बैठाना चाहते हैं। जब मैंने पूछा– कुर्सी! वो क्या होती है, तो उन्होंने कहा– अरे आप राजघराने की होकर भी कुर्सी की महिमा नहीं जानती हैं? कुर्सी वह होती है, जिसमें सारे नेताओं की जान बसती है। उसका एक पाया तोड़ो, दो पाया तोड़ो, कुछ नहीं होगा। जब तक उसका पुर्ज़ा पुर्ज़ा न तोड़ दो, हम नेता उससे दीमक की तरह से चिपके रहते हैं। हां, कुर्सी बोले तो राज सिंहासन मीरा जी।

किन्तु भाई, मैं तो यहां वहां भटकती रहती हूं। वन में, मरुस्थल में, नदी किनारे, यहां मुंबई में सागर किनारे, थकान लगे तो रेत पर बैठ जाती हूं। तभी तो हम आपको एप्रोच कर रहे हैं कि आपको कुछ नहीं चाहिए। आप हमारी पार्टी के लिए परफेक्ट कैंडिडेट हैं। हाई क्लास से हैं, तो हाई क्लास के वोट मिलेंगे, महिला हैं तो रिज़र्व सीट का फायदा मिलेगा, गाती हैं तो आर्टिस्ट कम्युनिटी के वोट, साध्वी हैं तो साधु संतों के वोट, दलितों के बीच घूमती हैं तो दलितों के वोट, मुस्लिम पीर फकीरों से दोस्ती है, तो मुस्लिमों के वोट, कृष्ण की भक्त हैं तो यादवों के वोट, मारवाड़ी हैं तो नोट ही नोट, गुजराती में गाती हैं तो गुजराती वोट। सिंपल सी बात है गुजराती में गाती हैं तो काटेंगे मोदी के वोट, तो दूसरे ने कहा आपके कारण मिलेंगे मोदी को गुजराती वोट। और मीरा बाई जी आपको पता है, हमारे प्रधानमंत्री को सोशल मीडिया को एक्स्प्लोर करना खूब आता है। आपको भी वे फेसबुक, ट्विटर, ब्लॉग पर फेमस कर देंगे और यंगस्टर्स का आइकॉन बना देंगे। अगर आपने बीजेपी ज्वाइन कर ली तो ओबामा भी आपके भजन गाते हुए घूमेंगे।

पग घुंघरू बांध मैं तो नाचा रे

प्रभु आप हंस रहे हैं। मैं तो बस आपको जानती हूं। मेरा क्या लेना देना ओबामा या नरेंद्र मोदी से। जी क्या कहा प्रभु, यदि दुनिया में आपके सिद्धांतों को फैलाना है, तो लगता है मुझे भी इलेक्शन लड़ना होगा। संभवामि युगे युगे...। जी समझी प्रभु आपका काम मुझे ही करना है। आपकी आज्ञा शिरोधार्य करके मैं उन टोपी धारियों को अपनी रूचि

दिखाई और पूछा– आप सबकी पार्टी में तो वैसे ही कुर्सी की मारा मारी है? आप सब मुझे क्यों लेना चाहते हैं? तो उन्होंने कहा– वही तो मीरा बाई, अभी आपने कहा कि न आपका कोई भाई बंधु है, न कोई सगा। इसीलिए तो आप हमें फैसिनेट कर रही हों। क्योंकि अब हर पार्टी अपने भाई-भतीजे और बहु-बेटियों को ही टिकट दे रही है। आपके आने से यह ट्रेंड टूटेगा। आप हमारे लिए वोट उगाहेंगी। हमें जिताएंगी, फिर एकतारा लेकर अपने गिरधर की डगर पर चल पड़ेंगी। वरना यहां तो हममें से हरेक सिंहासन पर फेविकोल से चिपकना चाहते है।

दूसरी बात ये कि बड़े बड़े गठबंधन टूट गए हैं, सालों से लिव इन रिलेशनशिप में रह रही पार्टी अलग हो गई हैं। अब उन्हें दूसरे साथ सहारों की ज़रुरत है, जो आप बन सकती हैं और यदि आप गाकर रिदमिक में दूसरी पार्टी के कच्चे चिट्ठे खोलेंगी तो जनता बहुत इम्प्रेस होगी।

प्रभु ! मैं बहुत कंफ्यूज हो गई। कौनसी पार्टी ज्वाइन करूं। फिर मैंने तय किया, मैं अपनी पार्टी बनाऊगी और चुनाव लड़ूंगी। आपने अर्जुन को पूरा महाभारत का युद्ध जिता दिया, तो क्या मुझे भारत का एक चुनाव नहीं जिता पाएंगे आप ? मैंने अपनी पार्टी का नाम रखा है 'भारतीय राष्ट्र बहुजन कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टी' जानती हूं, प्रभु इतना बड़ा नाम। पर ये अवसरवादिता है।

अगर बहुमत मिल गया तो डंके की चोट पर बाकी पार्टियों को बताऊंगी कि लोकतंत्र में से तुमने लोक को ही भुला दिया है। जनता को केवल वोट बैंक समझ कर हाशिये पर डाल दिया है, लेकिन खुदा न खास्ता। अगर बहुमत नहीं मिला तो भारतीय बीजेपी से जोड़ेगा, बहुजन मायावती से, राष्ट्रीय कांग्रेस क्रमशः एनसीपी और कांग्रेस से एंड यू नो प्रभु सो ऑन।

प्रभु ! अपडेट ये है मेरी पार्टी को अच्छा रिस्पांस मिलने लगा है। बहुत सी पार्टी के नेता छोड़कर मेरी पार्टी में शामिल हो चुके हैं। इन्हें ज़रा भी देर नहीं लगी, क्योंकि कपड़े बदलने की तरह ये दल बदलने में माहिर हैं। जहां उगता सूरज देखते हैं साष्टांग दंडवत शुरु कर देते हैं। डूबते जहाज से सबसे पहले चूहे भागते हैं। ये बात इन पर एकदम फिट बैठती है।

डोंट वरी प्रभु फाइनेंस का इंतज़ाम चुटकियों में हो रहा है। आपके लेटर हैड पर सारे उद्योगपतियों, मीडिया और ठेकेदारों को लेटर्स भिजवा दिए हैं। आपके नाम पर बड़ी बड़ी धनराशि आनी भी चालू हो गई है। वर्ल्ड वाइड पब्लिसिटी के लिए अमेरिका की बड़ी पीआर कंपनी हायर कर ली है। नमो से एक बात सीख ली है कि कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालों यारों।

थैंक यू गॉड, दुष्यंत कुमार का ये शेर अच्छा लगा। नई और भी अच्छी शायरी सीख रही हूं। एक टीचर रख लिया है। महाराष्ट्र की तीन सीटों से मैंने पर्चे भरे हैं, शिर्डी, वर्ली और महालक्ष्मी। शिर्डी में साईं बाबा, वर्ली में हाजी अली और महालक्ष्मी में लक्ष्मी माता का फुल सपोर्ट है। ऑफ कोर्स प्रभु, हम होंगे कामयाब। फिर करेंगे अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना। लेटस क्रॉस द फिंगर्स। थैंक यू गॉड फॉर सेइंग, आमीन।

अलका अग्रवाल सिगतिया
साहित्यकार, मुंबई

अल्पना चित्र प्रतियोगिता में उकेरी मनमोहक कलाकृतियां

राजसमंद. श्री द्वारकेश राष्ट्रीय साहित्य परिषद् कांकरोली के तत्वावधान में वाल्मिकी समाज कांरोली की अध्ययनरत बालिकाओं द्वारा दीपावली पर्व पर मांडणा, चित्रण के अन्तर्गत अल्पना चित्र प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसके तहत छात्राओं ने एक से बढ़कर एक मनमोहक आकृति उकेरी। मयूर, दीपक एवं फूल-पत्तियों के वृतों का घरो के मुख्य द्वारों पर मां लक्ष्मी के शुभ आह्वान के लिए सजावट की गई। विभिन्न आकृतिया कोरी गई। संस्था संचालक फतहलाल गुर्जर 'अनोखा', अध्यक्ष डॉ. राकेश तैलंग अध्यक्ष और वरिष्ठ साहित्यकार दुर्गा शंकर मधु द्वारा उत्साह वर्द्धनार्थ प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी में पारितोषिक दिए गए। इसके तहत क्रमशः ऋतिका व साक्षी कक्षा 9 प्रथम, किरण, निकी कक्षा 7 द्वितीय तथा वैष्णवी, नीतू कक्षा 5 तृतीय रही। सफाई व लिपाई, कोराई में श्रीमती नर्वदा देवी पत्नी बंशी लाल चतुर्थ श्रेणी पेंशनर वाल्मिकी को प्रथम पुरस्कार दिया गया, जिससे स्वच्छ भारत का लोगों को संदेश दिया।

‘लिव इन रिलेशनशिप’ खतरे की घंटी

लिव इन रिलेशनशिप इक्कीसवीं सदी के पूर्वाद्ध की एक महत्त्वपूर्ण नवीनतम अवधारणा है। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इन्दिरा शर्मा बनाम वी.के.वी. शर्मा (ए.आई.आर. 2014 एस.सी. 309) के मामले में इसे एक हद तक मान्यता प्रदान की गई है। इस अवधारणा के पीछे स्वतंत्रता के मूल अधिकार का प्रभाव हो सकता है या फिर पाश्चात्य संस्कृति का।

लिव इन रिलेशनशिप में दो व्यक्ति (पुरुष एवं स्त्री) स्वेच्छा से एक साथ रहते हैं तथा संबंध स्थापित करते हैं। वे एक साथ ऐसे रहते हैं, जैसे पति पत्नी रहते हैं, लेकिन लिव इन रिलेशनशिप से वैवाहिक प्रकृति के संबंध स्थापित नहीं होते। इस अवधारणा के पीछे मुख्य उद्देश्य यह प्रतीत होता है कि दो वयस्क व्यक्ति एक साथ रहकर अपने जीवन का आनन्द ले सकें। लिव इन रिलेशनशिप में सामान्यत: अविवाहित व्यक्ति रहते हैं। इसमें पुरुष व स्त्री दोनों एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। स्त्री सारे घरेलू कार्य देखती हैं।

लिव इन रिलेशनशिप को मान्यता देने के पीछे मुख्य उद्देश्य यह भी रहा है कि ऐसे लोग जो लम्बे समय से शांतिपूर्वक एक साथ रह रहे हैं। उन्हें तंग या परेशान नहीं किया जाए। पुलिस अधिकारी भी उनके संबंधों में अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं करें।

दीपिका बनाम स्टेट ऑफ उत्तरप्रदेश (ए.आई.आर. 2014 इलाहाबाद) के मामले में इलाहाबाद उच्च न्यायालय द्वारा यह कहा गया है कि जहां पुरुष एवं स्त्री स्वतंत्र इच्छा से पति पत्नी के रूप में एक साथ रह रहे हो तथा उनका जीवन शांतिपूर्वक चल रहा हो। वहां उनके अभिभावकों या रिश्तेदारों की शिकायत पर पुलिस अधिकारी द्वारा उनके शांतिपूर्वक जीवन में हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए।

समाज में ऐसे अनेक व्यक्ति है, जो विवाह नहीं करना चाहते व अपने जीवन में आनन्द उठाने के लिए लिव इन रिलेशनशिप में रहना पसंद करते हैं। लिव इन रिलेशनशिप उनके लिए वरदान है, लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है, जहां यह वरदान है। वहां यह कभी कभी अभिशाप भी बन जाता है। इसके अनेक कारण है, यथा–

1. लिव इन रिलेशनशिप के संबंध कभी भी समाज में हो सकते हैं या किए जा सकते हैं।
2. लिव इन रिलेशनशिप में स्त्री को वे अधिकार नहीं मिलते, जो एक विवाहित स्त्री को प्राप्त होते हैं।
3. लिव इन रिलेशनशिप में रहने वाली स्त्री भरणपोषण का क्लेम नहीं कर सकती।
4. लिव इन रिलेशनशिप के दौरान जन्मे बालकों की वैधानिक स्थिति स्पष्ट नहीं है।
5. लिव इन रिलेशनपिशप में स्त्री अक्सर धाखे का शिकार होती है।
6. लिव इन रिलेशनशिप में कई बार स्त्रियां भी पुरुषों का अनावश्यक शोषण करती है।
7. लिव इन रिलेशनशिप में भावनात्मक संबंध स्थापित होने की संभावना कम रहती है।

इन्दिरा शर्मा के मामले में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा लिव इन रिलेशनशिप के संबंध में उचित विधायन बनाने की सरकार से अनुशंषा की गई है। लिव इन रिलेशनशिप के दुष्परिणामें से संबंधित अनेक मामले न्यायालयों के समक्ष आ च ुके हैं। स्टेट ऑफ उत्तरप्रदेश बनाम नौशाद (ए.आई.आर. 2014 एस.सी. 384) के मामले में लम्बे समय तक लिव इन रिलेशनशिप में रहे। अभियुक्त अभियोक्त्री को उसके साथ विवाह करने का आश्वासन देते हुए लैंगिक संबंध स्थापित किया, जिससे अभियोक्त्री गर्भवती हो गई। बाद में अभियुक्त ने अभियोक्त्री के साथ विवाह करने से इनकार कर दिया। अभियोक्त्री छलावे का शिकार हो गई।

ऐसा ही एक और मामला बुहिसत्व गौतम बनाम कुमारी शुभा चक्रवर्ती (ए.आई.आर. 1996 एस.सी. 922) का है। इसमें बुहिसत्व गौतम एक लम्बे समय तक शुभ्रा चक्रवर्ती के साथ रहा और उसके साथ प्रवचनापूर्ण विवाह रचनाकर उसका लैंगिक शोषण करना रहा। कालान्तर में बुहिसत्व गौतम ने किसी अन्य स्त्री से विवाह कर लिया। यहां भी शुभ्रा चक्रवर्ती धोखे का शिकार हुई। कुल मिलाकर लिव इन रिलेशनशिप एक खतरे की घंटी है। ऐसे संबंध कभी भी समाज में हो सकते हैं और पक्षकार दुविधा में पड़ सकते हैं।

डॉ. बसन्तीलाल बाबेल
पूर्व न्यायाधीश एवं शासन उप सचिव
राजस्थान सरकार जयपुर

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिए-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

डिलिट होती रिश्तों की मिठास

विजय शर्मा @ जयवर्द्धन

अभी मैसेज को देखकर और डिलीट करके रुका तो मोबाइल ने कहा कि बैटरी लो, फिर चार्ज पर लगाया और कुछ देर बाद देखता हूं, तो 967 अनरीड मैसेज। सारे मैसेज दीपावली की शुभकामनाओं के, इन सारे मैसेज में करीब वही चित्र, वही संदेश सारे कॉपी पेस्ट किए हुए। इसी तरह दीपावली की शुभकामनाओं को प्रेषित करने की औपचारिकताएं हम सभी पूरी कर लेते है। अब वह दौर तो नहीं रहा कि किसी के पते पर पोस्टकार्ड पर अपने हाथ से शुभकामना संदेश लिखकर भिजवाया जाए, जिसे पढ़कर अपना प्रिय रिश्तेदार उस हाथों की लिखावट में अपने रिश्तेदार के प्रेम को महसूस कर सकें। अब तो निकटतम रिश्तेदार को भी हम एक कॉपी किया हुआ संदेश भेजकर रिश्तों की इतिश्री कर लेते हैं। मोबाइल के मैसेज की तरह हमारे रिश्ते भी क्षणिक होते जा रहे हैं। मोबाइल के इन अनगिनत कॉपी पेस्ट मैसेज से मेमोरी फुल होने पर मैसेज के साथ ही रिश्तों की मिठास भी कब डिलिट हो जाती है, यह हमें अहसास ही नहीं होता है।

मोबाइल के बाद पोस्टकार्ड व अन्य कार्ड के जरिए शुभकामना संदेश प्रेषित करने की परंपरा लगभग खत्म हो गई हैं। मुझे याद हैं तब मेरी बहिन और मेरे मित्र के दीवाली के संदेश पत्र पढ़कर भावातिरेक में अक्सर आंखे गीली हो जाया करती थी। रिश्तों में वो अपनापन दूर रहकर भी महसूस किया जाता था। मैंने अपने प्रिय रिश्तेदारों के वो संदेश पत्र आज भी सहेज कर रखे है, जिन्हें पढकर रिश्तों का वह मीठा अहसास आज भी मिलता है। आज भी वो पुराने संदेश पत्र किसी संरक्षित पूंजी की तरह लगते हैं।

समय हमेशा प्रगतिशील है, समय के साथ हमें भी बदलना चाहिए। मगर क्या इस दौर में हम अपने भावनात्मक संबंधों में कुछ कमी नहीं महसूस कर रहे हैं? इस कृत्रिम युग में हमारे रिश्ते भी अब औपचारिक होते जा रहे हैं। दीवाली पर आजकल मिट्टी के दीए की जगह चाइना की रंग बिरंगी चमकीली लाइट ने ले ली है। चमकीली लाइट में चमकीले कपड़े पहनकर नकली हंसी हंसने से मोबाइल की सेल्फी तो बड़ी सुंदर आ जाती है, मगर वो सेल्फी उस अभाव पूर्ण बचपन में अपनों के साथ खिलखिलाती मुस्कान का वो अहसास नहीं दिला सकती है। पुराने घर पर बने मोहन थाल और हलवे का मजा अब नहीं रहा। आजकल त्योहार के मौके पर महंगी मिठाइयां जो बाहर की बनी हुई है, जिस पर शुद्धता की गारंटी का टैग लगा रहता हैं। ठीक इसी तरह रिश्तेदारों को भी हर मौके पर बोल बोलकर अपनेपन का प्रमाण देना पडता हैं और ये प्रमाण ही अक्सर मिठास में संदेह पैदा करते हैं। हम नए दौर की नवीनता को अपनाते हुए अपनी जड़ों को पहचानें और अपने रिश्तों को सिर्फ एक दिन ही नहीं, बल्कि वर्ष भर अहमियत दें।

जयवर्द्धन के पाठकों को सिर्फ दीपावली के दिन की शुभकामनाएं नहीं, जीवन के एक एक क्षण के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्रीमती भाग्यवंती कुमावत	ग्राम विकास	नानालाल कुमावत
सरपंच	अधिकारी	उपसरपंच

-: ग्राम वासियों से अपील :-

◆ ग्राम पंचायत के समस्त निवासियों से अपील की जाती है कि अपने-अपने घरों में जलबद्ध शौचालयों का निर्माण करवाएं और उसका नियमित उपयोग करें। ◆ ग्राम पंचायत को खुले से शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाए रखने एवं ग्राम पंचायत को साफ-सुथरा व निर्मल बनाने में सहयोग प्रदान करें। ◆ पर्यावरण संरक्षण के लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं। ◆ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें। ◆ जागो अब जल के लिए, बचाओ उसे कल के लिए। ◆ सरकार ने संभाली हैं जल संचय की कमान, अब और बढ़ेगा राजस्थान का मान। ◆ पानी का नहीं कोई विकल्प, जल संरक्षण का ले संकल्प। ◆ हम सब हैं साथ, जल ग्रहण विकास अब अपने हाथ। ◆ जल की बचत अधिक उपज

ग्राम पंचायत एमड़ी
पंचायत समिति व जिला-राजसमंद

निष्काम कर्म के सच्चे सेवक
डॉ. माधवलाल पीपलीवाल

मानव सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं होता है। रोग ग्रस्त शरीर को ठीक करना सबसे बड़ी सेवा माना जाता है, क्योंकि जीवन बचाने वाला किसी मसीहा से कम नहीं होता। इसलिए वैद्य और डॉक्टर को ईश्वर का दर्जा दिया गया है। आज के समय में भले इसे पेशा बना दिया है, पर पहले इसे सेवा धर्म माना जाता था।

आज बड़े बड़े अस्पताल बन गए हो, अच्छी सुविधा देश में हर शहर में उपलब्ध है, मगर वो जमाना था, तब बड़े शहरो में भी चिकित्सा मुहैया आसानी से नहीं थी। छोटे कस्बो में तो गिनती के डॉक्टर हुआ करते थे, देश में गरीबी थी, मंहगा ईलाज करवाना आम आदमी के बस में नहीं था। उस युग में मसीहा बनकर कांकरोली जैसे छोटे से कस्बे में एक डॉक्टर आया, जो मानव सेवा का सच्चा उदाहरण था। कहते हैं कि मानव सेवा करना मानव का सर्वप्रथम कर्तव्य है, उसका निर्वाह जीवन भर अपने पेशे को धन कमाने का माध्यम ना बनाते हुए बहुत ही कम खर्च में जनता का इलाज जिसने उपलब्ध करवाया, आज हम बात करने हैं। ऐसे ही कर्मयोगी डॉ. माधवलाल पीपलीवाल की, आपका जन्म तंबोली कुमावत समाज के बहुत साधारण खेतीहर कृषक परिवार में पिता चुन्नीलालजी, माता रामसुख बाई के द्वितीय पुत्र रत्न के रूप में 10 सितम्बर 1921 को बनेड़ा (भीलवाड़ा) में हुआ। उनके चार भाई और दो बहने, इसमें सबसे बड़े भाई लादूलाल और माधवलाल से छोटे भगवतीलाल, रतनलाल मदनलाल और बहने गट्टू बाई और नानू बाई।

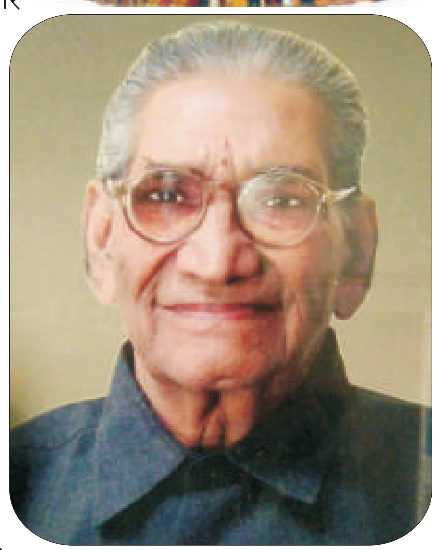

विगत 65 वर्षों तक श्री माधवलाल ने कांकरोली और इसके आस पास के सभी ग्रामीण इलाकों में अपनी स्वास्थ्य सेवाओं से सभी का दिल जीत लिया था। उस जमाने में राजसमंद में माधवलाल का मतलब डॉक्टर और डॉक्टर का मतलब माधव लाल था। अंग्रेजी दवाइयों के कांकरोली में यह पहले डॉक्टर थे, जिन्होंने अपनी सेवाओं से सभी का इलाज किया।

चिकित्सा के क्षेत्र में एलसीपीएस की पढ़ाई करने के बाद इन्होंने अपनी प्रैक्टिस कांकरोली जैसे छोटे से कस्बे में शुरू की और अपने निष्काम सेवा कर्म को जिंदगीभर गरीबों की मदद करते डॉक्टर के रूप में गुजार दी। आस पास के गांव के लोग मादूलाल जी कहते हुए उन्हें गरीबों का डॉक्टर के नाम से सम्मान देते थे।

1944 में राजसमंद में हैजे की बीमारी का प्रकोप हुआ, तब माधवलाल जी ने अपनी भूमिका को बखूबी निभाया और कई बीमार लोगों का इलाज करके अपनी पहचान को कायम किया। हैजे की बीमारी से मुक्ति दिलाने पर 1945 में इनका सभी संस्थाओं और नगर वासियों की तरफ से नागरिक अभिनंदन सम्मान किया गया। ये किसी भी डॉक्टर के लिए बड़ी बात होती है।

उनके खास मित्रों में उनके प्रिय सखा समाजसेवी ईश्वर चन्द्र शर्मा ने अपने विचार डॉ. साहब के प्रति कुछ यूं रखे कि डॉ. माधव लाल मेरे मकान के पड़ोस वाले मकान में आकर रहे। उन्हें डॉक्टर के रूप में श्री द्वारकाधीश मंदिर के तत्कालीन महाराज बृजभूषण लाल और उनके परिवार एवं नगर की जनता की अच्छी सेवा व स्वास्थ्य लाभ हेतु उनको श्री राजकृष्ण माथुर की अनुशंषा पर यहां द्वारकेश डिस्पेन्सरी नामक औषधालय सुखपाल भवन में चलाने का भार सौंपा, तब से मेरा उनसे सम्पर्क जीवंत रहा। मैं उन्हें पिता तुल्य मानते हुए बाबूसा ही कहता था। मेरे बाबूसा का सर्वरूप सबको मोहित कर लेता था। मैंने आज तक बाबूसा के किसी निर्देशों का उल्लंगन नहीं किया, जीवन जो कुछ है, उन्हीं निर्देशो से बना है। शुभ कर्म ही धर्म है, यही उनका जीवन लक्ष्य रहा है, जो मेरे लेटर पेड पर वाक्य स्थान पाए हुए है। गीता के बाहरवें अध्याय की कसौटी पर बाबू सा को में खरा पाता हूं। मैं सोचता हूं माला और राम नाम लिखने से बड़ा अपने रोगी को भगवान मानकर उसकी सेवा में जो आनन्द उन्होंने प्राप्त किया, उसकी मिसाल विरली है। मैंने हर परिस्थिति में उनके जीवन व्यवहार को आर्दश माना है।

इनके एक और प्रिय मित्र शिक्षाविद् यमुना शंकर दशोरा ने अपने विचार कुछ यूं रखें- डॉ. माधवलाल चिकित्सा के प्रेति सदैव समर्पित अनुभवी और आदर्श रोगियों के प्रति उनका मृदु व्यवहार रोग का सही निदान एवं सार्थक उपचार उनकी विशिष्ठता थी। आर्थिक रूप से कमजोर लोगों से उन्होंने अपना शुल्क एवं दवाओं का मूल्य कभी नहीं लिया। उनकी सेवा में वे अपने आपको भाग्यशाली मानते थे, वे मित्रता और अपनत्व की प्रतिमूर्ति थे। मेरे प्रति उनका अगाध स्नेह एवं विश्वास था। मेरी पत्नी गंभीर रूप से रोगग्रस्त हो गई थी।

उस हालत में डॉ. साहब ने उपचार देकर स्वस्थ करने में सारी शक्ति लगा दी थी। इस एहसान का बदला चुकाना मेरे लिए असंभव है। मैं जब भी इलाज में लगी मूल्यवान दवाओं का मूल्य चुकाने का आग्रह करता, वो हंसकर कहते तेरे नोट मेरे यहां नहीं चलते।

उनकी इसी उदारता का स्मरण ताउम्र मेरे जेहन में वास करता रहेगा। ऐसे गजब के इंसान और मित्र मुश्किल से मिलते हैं। माधव लाल के खास मित्रों में नारायण शर्मा, राधारमण सनाढ्य, पन्नालाल, थानेदार सागरमल कावड़िया, मोहनलाल बापना, धर्मेश डांगी, मोहनलाल पुरोहित आदि थे। माधव लाल के व्यक्तित्व की वजह से उन्हें कई सम्मानों से नवाजा गया। सेवा सम्मान में स्थानीय डॉक्टर्स द्वारा पितामह की अलंकृत उपाधि से सम्मानित किया। हैजे की चिकित्सा के लिए 1945 मैं सार्वजनिक नागरिक अभिनंदन, डब्ल्यू एचओ विश्व स्वास्थ्य संगठन की विशिष्ठ डॉक्टर्स सूची में सम्मिलित, 1981 में तत्कालीन मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार द्वारा प्राणाचार्य की उपाधि से सम्मानित, द प्राइवेट मेडिकल प्रेक्टिशनर एसोसिएशन ऑफ इंडिया की राजस्थान इकाई द्वारा श्रेष्ठ चिकित्सक का सम्मान, 1999 को पीएमपी द्वारा अवार्ड ऑफ ऑनार एवं 2001 में उदयपुर कमिशनरी वैद्य सभा द्वारा धनवंतरी प्रतिभा प्रदान कर सम्मान किया गया।

डॉ. साहब पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों को भी बहुत महत्व देते थे। श्रीमती प्रभा पहाड़िया ने माधवलाल के बारे में लिखा कि मेरे नानाजी के व्यक्तित्व की यह विलक्षणता थी कि वह अपने संपर्क में आने वाले व्यक्तियों का मन सहज ही जीत लेते थे, उनका मन दर्पण सा स्वच्छ एवं सागर सा अगाध था। वे ओजस्वी वाणी के धनी व अत्यंत स्पष्टवादी और निर्भिक व्यक्ति थे। उनकी स्पष्टता के सभी लोग कायल थे, पर कुछ नाराज भी हो जाते थे। बाद में यथार्थ जानकर वह सभी पुनः आकृष्ट हो जाते थे। सहजता से परिवार समाज एवं सभी क्षेत्र में अपने समस्त स्रोतों एवं शक्ति तथ उदार मन से लोगों के दुख दर्द का निवारण एवं सहयोग करने का प्रयास करते थे। वे वट वृक्ष की भांति थे, जिनकी छाया में हम सभी लोगों को सुकून मिलता था। कड़ा अनुशासन संयमित दिनचर्या सादा जीवन उच्च विचार से उनका सारा जीवन गंगाजल जैसा पावन और अर्थ पूर्ण रहा।

डॉक्टर साहब खाने पीने के भी शौकीन थे, पेय पदार्थ में उनको दूध सबसे प्रिय था। राजभोग, रबड़ी और मंदिर का प्रसाद विशेषकर उनकी पसंद हुआ करती थी, भगवान श्री कृष्ण को अपना आदर्श मानते थे। श्री द्वारकाधीश तृतीय पीठ के महाराज श्री बृजभूषण लाल का वरदहस्त उन पर सदा रहा। माधवलाल भी महाराज श्री को गुरु और पिता तुल्य मानते थे। आपकी साहित्य में और किताबें पढ़ने में भी बहुत रूचि थी।

जीवनसंगिनी के रूप में श्रीमती भूरी बाई उनकी पहली पत्नी थी, जिनका स्वर्गवास होने पर श्रीमती नंदू बाई से पुन विवाह किया। दोनों का स्वर्गवास आपके जीवित रहते हो चुका था। आपका सामाजिक जीवन बहुआयामी था। आपको सामाजिक क्षेत्र से भी बहुत सम्मान मिला। श्री सूर्यवंशी कुमावत तंबोली समाज उदयपुर द्वारा 1995, 2004 व 2005 में विशिष्ट सम्मान मिला, भीलवाड़ा समाज द्वारा 1994 में सम्मान मिला, इंदौर एवं बुरहानपुर समाज द्वारा 1996 में सम्मान मिला, कुमावत युवा परिषद उज्जैन द्वारा 1999 समाजसेवी की उपाधि से भी आपको अलंकृत किया गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति के थे, आपने चारों धाम की यात्रा और नेपाल के पशुपति धाम की यात्रा की भी थी।

अपने जीवनकाल में आपने निष्काम कर्म की यात्रा करते हुए जीवन के 87 बसंत को देखा और विगत 65 वर्षों से अधिक समय से एक ही लक्ष्य साध रोगियों की सेवा करते हुए मेवाड़ के कांकरोली और आस पास के क्षेत्र में चिकित्सा की गंगा लेकर जो भागीरथी कर्म कर अपने अथक प्रयासों से अनुशासन, सादगी, सरलता, उदार भावना से अपना जीवन मानव सेवा में समर्पित कर दिया। इसी समर्पण से बह निकली निष्काम कर्म की इस अविरल धारा को अंतत विराम मिला। जीवनभर अपने डॉक्टर धर्म का निर्वाह करते हुए दिनांक 1 सितंबर 2008 सोमवार को सभी को छोड़कर देवलोक गमन कर गए। वो अपने पीछे अपने 3 पुत्र कैलाश, राकेश, लोकेश और 5 पुत्रियां कमला, विमला, शारदा, कुसुम, गायत्री और बहुत बड़ा हंसता खेलता परिवार अपने इष्ट मित्र, सगे संबंधियों और अपने रोगियों को छोड़ सदा के लिए इस मृत्यु लोक से अलविदा कह गए। आज भी माधव लाल का जिक्र करते नगरजन समाजसेवी डॉक्टर के रूप में नाम अपनी जुबान पर सदा रखते हुए उन्हें याद करते हैं।

आपके जीवन पर माटी का लाल कॉलम लिखकर मैं भी अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता हूं। हमारे प्रेरणा परम श्रद्धेय स्वर्गीय माधवलाल जी पीपलीवाल नाम से एक स्मारिका कुमावत युवा परिषद उज्जैन ने भी प्रकाशित की, जिसमें से कई जानकारियां मिली। उनके परिवार इष्ट मित्रों से भी माधव लाल के जीवन की जानकारी उपलब्ध हुई। सभी का तहे दिल से आभार व्यक्त करते हुए उनकी जीवनी से युवा पीढ़ी को नया मार्गदर्शन मिलेगा, इसी आशा और विश्वास के साथ आदरणीय डॉक्टर माधव लाल जैसी महान विभूति को कोटि कोटि नमन करता हूं।

सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच, राजसमंद
मो. 9414 6 21 730

उत्तम
इलेक्ट्रीकल्स एण्ड सेनेट्रीवेयर्स
उचित मूल्य पर इलेक्ट्रीक एवं सेनेट्री आईटम उपलब्ध
SSK Electrical Excellence
PRINCE
BONTON CABLES
ashirvad
Goldmedal SWITCHES & SYSTEMS
Corsa BATH FITTINGS
पूर्णशंकर बागोरा मो. 9950691936, 9414025471
जलचक्की रोड, कांकरोली, जिला-राजसमंद

उच्चतम क्वालिटी
की गृह सज्जा लाइट व सेनेट्री का सामान
होलसेल दर पर उपलब्ध
उत्तम लाइट | उत्तम सेनेट्री
96804-90480 | 98297-27280

ज्योति पर्व
दीपावली
की समस्त
जिलेवासियों
को हार्दिक
बधाई
एवं शुभकामनाएं
पूरणसिंह शेखावत
Govt. Contractor
C Class PWD, Municipal, Irrigation

'जय श्री गौराजी बावजी' 'श्री गणेशाय नमः' 'जय श्री कालाजी बावजी'

श्री तुलसी ट्रेडर्स

बिरला सम्राट
चेतक
सीमेंट

हमारे यहां सीमेंट
सफेद सीमेंट, चिप्स मिलती हैं।

संजय टाक 8078681308
कन्हैयालाल टाक 9214440558
किशन टाक 9413830218

100 फीट रोड, राजसमन्द, जिला-राजसमंद 313324

कन्हैयालाल टाक

ज्योति पर्व दीपावली की समस्त जिलेवासियों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

पानी टेंकर, रेती, पत्थर, गिट्टी, क्रेशर
गिट्टी, ईंटे व भराव एवं
सभी प्रकार के बिल्डिंग
मेटेरियल के लिए सम्पर्क करें।

Contact :
Kanhaiya Lal Tak 9571290408 9214440558
Manish Tak 9214440557 8003237980

श्री गोराजी कालाजी कन्स्ट्रक्शन

civil contractor PWD MCR rajsamand

तुलसी विहार 100 फीट रोड, राजसमंद, जिला-राजसमन्द

ज्योति पर्व दीपावली की समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

कुंवर शम्भूसिंह आरना

पूर्व उपसरपंच

निर्मल ग्राम पंचायत पिपलांत्री-राजसमंद

• श्री भैरूनाथ ग्रेनाईट, मड़का • श्री भवानी मार्बल, सापोल

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभुदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

दीपावली पर्व पर जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

राजसमंद सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लिमिटेड -राजसमंद

उचित दाम | अच्छी गुणवत्ता | शुद्धता की गारंटी

जिले में सहकारी दवाघर

आरके जिला अस्पताल, कमला नेहरु अस्पताल कांकरोली, सिटी डिस्पेंसरी राजनगर, गोवर्धन सामान्य अस्पताल नाथद्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र आमेट, देवगढ़, भीम, कुंभलगढ़, रेलमगरा, खमनोर

सदस्यों को 1 फीसदी छूट

जिले में सहकारी जनरल स्टोर

कमल तलाई, बस स्टैंड कांकरोली
किशोरनगर (मण्डा), राजसमंद,
आमेट, नाथद्वारा

सादर अनुरोध

पाठकगणों से अनुरोध है कि ज्यादातर पाठकों के जयवर्द्धन पत्रिका की वार्षिक सदस्यता पूरी हो चुकी है। इसीलिए वार्षिक सदस्यता के लिए जल्द 200 रुपए या तीन वर्ष की सदस्यता के लिए 500 रुपए जमा करवा कर शक्ति स्पोर्ट्स शास्त्री मार्केट कांकरोली अथवा हमारे प्रतिनिधि से रसीद प्राप्त कर सदस्यता नवीनीकरण करवाएं।

संपर्क : 94142-39648

खुशखबरी

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

खुशखबरी

आपके शहर कांकरोली (राजसमन्द) में महिला रोग प्रसूति एवं नि:स्संतानता विशेषज्ञा की सेवाएँ उपलब्ध ।

बनारस युनिवर्सिटि से विशेषज्ञता अर्जित लेडी डॉक्टर की सेवाएँ,
आधुनिक उपकरणों के साथ ।

डा. श्रीमती आकाँक्षा श्रीवास्तव
M.S.(OBS/GYN) BHU.
स्त्री रोग, प्रसूति एवं निस्संतानता विशेषज्ञा
रजि. 16779(RMC)
M : 91 63766 99424

सोनोग्राफी उपलब्ध

स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग

स्त्रियों के समस्त रोगों का उपचार । नसबन्दी सुविधा । प्रसूति सुविधा
मासिक धर्म सम्बन्धित रोगों का उपचार । सोनोग्राफी सुविधा । 3D-4D कलर
सोनोग्राफी । एम.टी.पी. (गर्भपात) एवं नसबंदी का सरकारी मान्यता प्राप्त केन्द्र
नि:संतान दम्पतियों हेतु । दूरबीन से बच्चेदानी और ट्यूब की जांच व निदान
बच्चेदानी निकालने का ऑपरेशन (TAH,VH,NDVH,LAVH)
एम्बुलेन्स सुविधा । हाई रिस्क गर्भावस्था (जोखिम भरी) का उपचार।
I.U.I द्वारा कृत्रिम गर्भाधान । नि:संतान दम्पत्तियों का उपचार । बार बार
गर्भपात होने का उपचार । असामान्य गर्भ (ECTOPIC PREGANCY)

एक बार सेवाका अवसर अवश्य प्रदान करें तथा संतुष्ट होने पर अन्य को भी बतावें ।
24 घंटे आपातकालीन सेवाएं उपलब्ध।

श्री राधिका हॉस्पीटल

श्री कृष्णा नगर, भीलवाड़ा रोड, कांकरोली राजसमन्द
M: 9414171606, 7838923466

ज्योति पर्व दीपावली की
समस्त जिलेवासियों को
हार्दिक
बधाई एवं शुभकामनाएं

राव मदनसिंह सेवालिया

ठि. देवाणा, राजसमंद

श्री सांवलिया कन्स्ट्रक्शन

AA Class PWD Govt. Contractor

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा, मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205, 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर
राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

An ISO -9001:2015 M. 9829445469, 9929495228

शाईन कम्प्यूटर्स

RKCL IT shapes future (Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

C.F.A (Tally)

पूर्ण व्यवसायिक कोर्स

SHiNE

GST/Tally ERP

RS-CIT | Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स | DCA | PGDCA | PDCA | Spoken English

राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान

शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469
शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

प्लास्टिक ना बाबा ना

प्लास्टिक से मुक्ति के लिए संकल्पित भारत सरकार ने सन् 2018 में पूरी दुनिया के लिए विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी करते हुए यह लक्ष्य निर्धारित किया था कि 2022 तक सिंगल यूज प्लास्टिक (एक बार उपयोग कर फेंकी जाने वाली प्लास्टिक) को पूरी तरह से खत्म कर दिया जाएगा, जिसकी घोषणा गांधी जयंती 2019 को की गई। इस ऐतिहासिक फैसले से संपूर्ण विश्व भर में सिंगल यूज प्लास्टिक पर बैन लगाने तथा प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने की पहल शुरू हुई। स्वच्छ भारत अभियान की प्रशंसा संपूर्ण विश्व में होने से प्लास्टिक मुक्ति के अभियान को भी सहमति मिलती दिख रही है। एक अध्ययन से यह प्रमाणित हुआ है कि प्रकृति अपशिष्ट नहीं बनाती है, अपशिष्ट मानव की देन है। प्रकृति अपने मूल स्वरूप में रहना चाहती है। मानव की दोहन व स्वार्थ प्रवृत्ति ने प्रकृति के स्वरूप को बिगाड़ने का कुत्सित प्रयास किया है। प्रत्येक जीव प्रकृति पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आश्रित है। इसलिए प्रकृति की धरोहर को संजोकर रखना जरूरी है। मानव का विकास और प्रकृति का संरक्षण दोनों में संतुलन से ही वैश्विक स्तर पर हो रहे पर्यावरण के नुकसान को रोका जाना संभव है। प्लास्टिक का बढ़ा हुआ प्रचलन संपूर्ण मानव जाति तथा अन्य जीव के लिए जी का जंजाल बन चुका है।

यूं हो रहा प्लास्टिक का प्रयोग

घर से लेकर सड़क, नाली, सीवर और समुद्र के आसपास हर जगह प्लास्टिक का कचरा नजर आता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, देश में प्रतिदिन 26000 टन प्लास्टिक कचरा निकलता है। भारत में हर साल प्रति व्यक्ति प्लास्टिक का प्रयोग औसतन 11 किलोग्राम है, जबकि अमेरिका में एक व्यक्ति द्वारा औसतन वर्ष पर्यंत प्रयोग 109 किलोग्राम है! प्लास्टिक के प्रति आमजन का प्रेमए प्रचलन व प्रयोग आमजन के लिए ही खतरे के रूप में सामने आ रहा है।

इस प्रकार होता है प्लास्टिक का निस्तारण

विश्व में कुल उत्पादित प्लास्टिक का 20 फीसदी पुन:चक्रित, 39 फीसदी जमीन में दबा कर नष्ट किया जाना, 15 फीसदी जला दिया जाना तथा शेष अव्यवस्थित रूप से संग्रहित रहता है। जलाने से उत्सर्जित कार्बन डाई- ऑक्साइड गैस की मात्रा 2030 तक तीन गुना हो जाएगी, जो कि भूमंडलीय तापन के लिए जिम्मेदार होगी। आंकड़ों के आधार पर 10.4 करोड़ टन प्लास्टिक कचरा प्रतिवर्ष समुद्र में मिल जाता हैए जिससे समुद्री जलीय पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो रहा है और जलीय जंतु जैसे व्हेल, मछलियां, कछुआ, आदि दम तोड़ रहे हैं।

सिंगल यूज प्लास्टिक है ज्यादा खतरनाक

हाल ही में हुए शोध के अनुसार प्रतिवर्ष इंसान 52 हजार से ज्यादा प्लास्टिक के सूक्ष्म कण खाने पीने एवं सांस द्वारा निगल रहा है। सभी ब्रांडेड बोतल की प्लास्टिक द्वारा विषैले रसायन उत्सर्जित होते हैं, जो भोजन व पानी में मिलकर, मानव शरीर में हार्मोन असंतुलन, कैंसर, मोटापा व ह्रदयाघात जैसी बीमारियों को जन्म देती है। साथ ही सिंगल यूज प्लास्टिक मवेशियों की अकाल मौत का कारण भी बन रही है, क्योंकि खाद्य पदार्थ के लिए उपयोग में आने वाली सिंगल यूज प्लास्टिक को मवेशियों द्वारा खा लिया जाता है और उनके आमाशय में रुकावट पैदा कर उन्हें अकाल मौत में धकेल देती है।

प्लास्टिक उत्पादों के यह है प्रकार

मानव जीवन की दिनचर्या का अभिन्न अंग बन चुकी प्लास्टिक ने 20 वीं सदी में प्रवेश कर 21वीं सदी में विकराल समस्या पैदा कर दी है। प्लास्टिक का प्रयोग प्लास्टिक बैग, फर्नीचर, सीट्स, फिटिंग, टैंक,स्टेशनरी, सेनेटरी, खिलौने, कपड़े, वाहन, भोजन व पेय पदार्थ पैकेट आदि के रूप में तेजी से प्रचलित हुआ है। अत: इन्हें संयमित व नियंत्रित रूप से प्रयोग में लेना होगा

प्लास्टिक है अविघटनकारी घटक

प्लास्टिक का प्रकृति में स्वत: विघटन नहीं होता है। इस घटक को विघटित करने के लिए जटिल व महंगी युक्तियां अपनानी पड़ती है। अन्यथा यह प्रकृति को नुकसान पहुंचाता है। एक प्लास्टिक बोतल लगभग 450 वर्षों में, फ्रॉम प्लास्टिक 80 वर्षों में, प्लास्टिक कप 50 वर्षों में, नायलॉन रैसे 30 से 40 वर्षों में तथा प्लास्टिक बैग 10 से 20 वर्षों में विघटित हो पाते हैं। अत: संपूर्ण देश में प्लास्टिक कचरे का निस्तारण करना तो दूर, इसका संग्रहण व रखरखाव भी संभव नहीं हो पा रहा है।

सिंगल यूज प्लास्टिक का निस्तारण संभव

एक बार प्रयोग में लेकर फेंके जाने वाली प्लास्टिक का निस्तारण व दुष्प्रभाव से बचाव के लिए रिड्यूस, रीयूज तथा रीसाइकिल का सूत्र अपना सकते है। इसमें प्लास्टिक को पुन: उपयोग में लेकर काफी हद तक हितकारी बनाया जा सकता है। अपशिष्ट के उपचार का उदाहरण बेंगलुरु में प्लास्टिक बोरी उत्पादककर्ता 57 वर्षीय अहमद खान ने एक आदर्श हल ढूंढा है, जो विगत 20 वर्षों से प्लास्टिक की बोरिया बना रहा है। पॉलीब्लेंड नामक पाउडर बनाकर, उसमें विट्यूमिन मिलाकर अब तक 40 किलोमीटर की लंबी सड़क का निर्माण कर चुका है। जिससे दम गोटू दुष्प्रभाव से भी बचा जा सका है तथा आमजन को सुविधा मिली है।

प्लास्टिक मुक्ति के लिए हम क्या करें

एक बार प्रयोग में लेकर फेंके जाने वाली प्लास्टिक के दुष्प्रभावों से बचने के लिए घर में पैदा होने वाले प्लास्टिक कचरे को स्वयं निस्तारित करें तथा इसके प्रयोग पर अंकुश लगाकर तिलांजलि देने तथा प्रकृति के प्रति अपना फर्ज अदा करें। किसी स्थानीय निकाय, ग्राम पंचायत व सरकारों के भरोसे ना रहे। हमारी प्रकृति बचेगी, तो हमारा सा अस्तित्व रहेगा। इसलिए पॉलीथिन छोड़िए और झोला पकड़िए। सिंगल यूज प्लास्टिक ने वायु, जल तथा पृथ्वी के भौतिक, रासायनिक व जैविक लक्षणों में होने वाले परिवर्तनों, जिनमें कि मानव जीवन, दूसरी वांछनीय जीवित जातियों को, पौधे की प्रक्रिया, जीवित परिस्थितियों, सांस्कृतिक संपत्ति तथा प्राकृतिक स्रोतों को हानि पहुंचाने का काम किया है। अत: हमें प्लास्टिक को ना बोलना है। इसके प्रयोग पर अंकुश लगाना है। प्लास्टिक को तिलांजलि देकर, प्रकृति के प्रति अपना फर्ज अदा करना है।

कैलाश चंद सामोता
अध्यापक राउप्रावि किला कुंभलगढ़

क्या हम मान ले कि हिंदुत्व खतरे में है!

वाद विवाद तब शुरू हुआ था, जब कमलेश तिवारी ने पैगंबर मुहम्मद पर भड़काऊ भाषण दिया था और कहा था कि यह देश हिंदुओं का है और हिन्दू चिंतनशील व सहृद है, जिन्होंने गैर हिंदुओ को आश्रय दिया हुआ है, पर ये गैर हिन्दू पीठ पर छुरा घोप रहे। अंतत: हुआ भी वही कमलेश तिवारी को सजा के रूप मे इन वहशी दरिंदो ने मौत की नींद सुला दी। 2015 की उस घटना के बाद लोग कमलेश तिवारी को भूल गए थे, जब कमलेश ने कट्टर सांप्रदायिक मौलाना को ललकारा था। कमलेश कभी भी हिंदुओं के लिए कोई विशेष चेहरा नहीं बन पाए, क्योंकि हिंदुओं में एकता नहीं, क्योंकि हिन्दू धर्म के किसी भी किताब के किसी भी पन्ने के किसी भी लाइन में यह नहीं लिखा है कि हिन्दू धर्म की शाख को अन्य धर्मो पर हावी किया जाए, जैसा कि इस्लाम में होता है, पर अलग धर्म या पूजा पद्धति के कारण किसी भी धर्म की निंदा किया जाना गलत है। हिन्दू धर्म में खुद ही हजारों प्रकार की पूजा पद्धति है और 33 कोटि देवता हैं। इनके पूजक आपस में पूजा पद्धति या देवता के मुद्दे पर कभी भी नहीं लड़ते हैं।

आज जब कमलेश तिवारी की हत्या कर दी गई, तो एक बार फिर वह चर्चा में आ गए और इस बार तो वह पहले से भी अधिक चर्चित हो गए। इस मुद्दे पर दो खेमे में बंटे हुए लोगों को बहुत साफ देखा जा सकता है। कुछ लोग कमलेश की हत्या को साजिश बता रहे हैं, क्योंकि उसने पैगंबर का अपमान किया था। पैगंबर के अपमान पर शरिया के अनुसार सर कलम करने की सजा है। इस घटना के हिमायती लोगों को पता होना चाहिए कि यह देश शरिया से नहीं चलता है और शरीया के अनुसार यहां सजा नहीं दी सकती है।

आपको अपने आस पास के ऐसे लोगों की पहचान करके उस पर नजर रखनी चाहिए, क्योंकि यही लोग मौका मिलने पर देश पर शरिया कानून थोपने की कोशिश करेंगे। साथ ही कमलेश को हिंदुओं का चेहरा बनाने की कोशिश की गई, जो पूर्णत: सत्य भी है। हिंदू महासभा के पूर्व नेता और हिंदू समाज पार्टी के अध्यक्ष कमलेश तिवारी की हत्या ने सबको हिला कर रख दिया है। सीसीटीवी में संदिग्ध कातिल की तस्वीरें कैद हो चुकी हैं। एक तस्वीर में चेहरा भी खुला नजर आ रहा है। ऐसे में पुख्ता सुराग हाथ में है। अब इंतजार गिरफ्तारियों का है, इलाके के लोगों का आक्रोश उफान पर है, जिस तरह से जानकारियां सामने आ रही हैं, उन्हें देखते हुए ये सवाल भी उठ रहे हैं कि इस नृशंस हत्या के आखिर कितने गुनहगार हैं? पैगंबर मोहम्मद के खिलाफ टिप्पणी से चर्चा में आए दिवंगत कमलेश के खिलाफ बिजनौर के उलेमा अनवारुल हक और मुफ्ती नईम कासमी ने सिर कलम करने का फतवा जारी किया था। इसलिए तफ्तीश के दायरे में फतवा देने वाले भी आने ही चाहिए। ये जानकारी भी सामने आई है कि इस्लामिक आतंकवादी संगठन **(ISIS)** के निशाने पर भी कमलेश तिवारी थे। दो साल पहले गुजरात एटीएस की उबैद मिर्जा और कासिम नाम के दो आतंकियों से पूछताछ में ये खुलासा हुआ था कि आतंकियों के हैंडलर ने तिवारी का वीडियो दिखाकर हत्या करने के लिए कहा था। इस जानकारी से भी ये साफ संकेत हैं कि हत्यारे मुस्लिम आतंकी संगठन या मुस्लिम कट्टरपंथी संगठन के या इनसे जुड़े हैं। उम्मीद है कि जल्दी ही हत्यारे और हत्या की साज़िश रचने वाले कानून के फंदे में होंगे।

लेकिन, इनके अलावा जो जानकारियां सामने आ रही हैं, वो भी चिंताजनक हैं। मसलन गुजरात एटीएस ने **ISIS** के दोनों आतंकियों से तिवारी की हत्या की साज़िश के खुलासे का जिक्र चार्जशीट में भी किया था और केंद्रीय जांच एजेंसियों को इसकी जानकारी भी दी थी। ये भी सामने आया है कि खुद तिवारी ने अपनी सुरक्षा बढ़ाने को लेकर प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और मुख्यमंत्री को टैग करके ट्वीट भी किया था और ये तीनों ही ट्विटर पर एक्टिव राजनेताओं में हैं, लेकिन हत्या के बाद ये भी खबरें आई हैं कि एक बुजुर्ग सुरक्षाकर्मी खानापुरी के लिए उनके साथ रखा गया था, जो वारदात के वक्त सोया हुआ था। यानि ये जानते हुए भी कि एक व्यक्ति दुनिया के सबसे खतरनाक आतंकी संगठनों में से एक के सीधे निशाने पर है, जिसकी पुष्टि उस संगठन के आतंकी कर चुके हैं, जिसकी जानकारी चार्जशीट में भी है। उसकी सुरक्षा एक नींद में डूबा सुरक्षाकर्मी कर रहा था, तब तो फिर हो लिए सुरक्षित! कमलेश तिवारी की मां ने खुले तौर पर अपने बेटे की हत्या के लिए उत्तरप्रदेश की बदहाल कानून व्यवस्था को जिम्मेदार ठहराया है। शायद उसका वीडियो भी है, मैंने देखा नहीं है, इसलिए उसका जिक्र नहीं करूंगा, लेकिन ये सरकार और कानून से उठ चुके भरोसे की पुष्टि करता है। सुप्रीम कोर्ट ने ऐसी ही लचर व्यवस्था के एक मामले पर अभी अभी यूपी सरकार को फटकार लगाई थी। कमलेश तिवारी पर रासुका लगा था, वो जेल गए थे। उनके बयान विवादों में रहे थे, ये सब बातें अपनी जगह, लेकिन उनकी हत्या से उठ रहे हर सवाल के जवाब सामने आने चाहिए और हत्यारे, साजिशकर्ता सलाखों के पीछे होने चाहिए।

पंकज कुमार मिश्रा
जौनपुरी (उत्तरप्रदेश), 8808113709

(नोट : ये लेखक के अपने विचार है।)

दीवाळी रा दीवा बळे म्हाने बी लसमी फळे

दीवाळी आड़ो मीना खाण रेवे न धूम धाम चालु वेई जावे। कोई नवा मकान री रजिस्टी करावे तो कोई जुना घरां रा केलू डांडा हारे। कोई डिस्टेम्पर करावे तो कोई आंगणा न भींतड़ा ने गारा गोबर ऊं लीपे। अणी मस आखा वरस रो दाळीदर सफा वेई जावे न नवो दाळीदर मेलवा री जगा वणी जावे। साफ सपाई न झकाझक लाइटां देखीन लसमी बी होचवा लागे के मूं कणीरे घरे पामणी वेऊं। हंगळाई घर टणाटण वे तो तीन दाण वे तो तीन दाण होचणो पड़े। गलतीऊं कणी कवि रे घरे परी जा तो हीटावणो पांती आई सके।

कविया रे अठे किताबां मले जणामें सरसती रो वासो है। केवे है के सरसती ने लछमी एक ठोड़े कदीस नी रेवे। या आवे तो वा नावे भन्ना भोट। लसमी री असवारी घुग्घो दुजूं तो अंधारा में रेवे पण लसमी रे बेवताई उजाळा आड़ी मूंडो करे। घुग्घा थारो भलो वेई, थूं कदीक तो तो म्हाणे घर में लसमी ने लाव परी। न लसमी बाई थां बी तो कदीक गेलो भूलो। आखी उमर गाडी गडारईस चाल्या जावो। काई अणी आड़ी अतरी काई ढील मेली राखी है। अतरो फरक करणो हाऊ नी है। गरीब मनख कठूं तो दीवा लावे न कठूं तेल लावे। अतरो दाबड़ो जमावे तो बाळ बश्या ने काई खवावे। अठे तो पेलीऊं दीवाळो निकल्यो लगो है। आटा न लूण मरस रो बन्दोस वे तो तेल दीवा री हूजना हूजे। म्हाणी भगती पे थांने संका है काई।

लसमी बोली, हूकी हूकी भगती करवाऊं काम नी चाले। थांणे घरे नी आवा रो बी कारण है। थां गामां गामां में भेरूजी, राड़ाजी, रामदेवजी, हंडुमानजी, सिवजी न ठाकुर जी रा मन्दर वणाया। है के नी ? वणा रे लारे म्हारी बेना दसा, हीतळा, अम्बा न काळी रा मन्दर बी खोब वणाया। पण म्हारा कतराक मन्दर वणाया। केवो दकां मने बी तो नंगे पड़े। थां तो मने कठेई ठकाणो नी दीदो तो मूं थांणे घर गाम में आईन एक पग पे उबी रेऊं काई। थांणांऊ तो ये सैर वाळा फेर बी हमजदार है। हिसाब- किताबऊं काम करे। वठेईस खरचो करे जठे फाइदो वे। सैरां में म्हारा मन्दर वे अणी कारण मूं सैरा वाला पे टूटमान वियां करूं।

मैं अरज कीदी, म्हाराऊं गलती वेईगी माता। पण मूं मन्दर वणाऊं कणी हाटे। खेत कूड़ा न रकमभाव तो हेठजी रे अठे गेणे पड्या लगा है। घर में उन्दरा ग्यारस करी मेली है। सोरा सापरा रे खावा रा वांदा है। पेली मने थोड़ाक रिप्या एडवान्स देई दो वणीऊं मन्दर री नीमां खोदणो चालु करूं। ज्यूं ज्यूं मन्दर वणे ज्यूं ज्यूं आगली किस्तां पास करता रीजो। मन्दर वण्या केड़े मारा पे किरपा करो जणी दाण ये रिप्या काटी लीजो।

डॉ. गोपाल राजगोपाल
राजस्थानी साहित्यकार व
आचार्य आरएनटी मेडिकल कॉलेज
उदयपुर, मो. 90012-95523

डॉ. गोपाल को साहित्यकार सम्मान से नवाजा

भीलवाड़ा. पिछले दिनों सत्यनारायण व्यास 'मधुप' द्वारा सम्पादित भीलवाड़ा की साहित्यिक पत्रिका 'साहित्यांचल' के दशम सम्मान समारोह में उदयपुर के डॉ. गोपाल राजगोपाल को उनकी उल्लेखनीय साहित्यिक सेवाओं के लिए 'शैलेन्द्र मरमट स्मृति साहित्यकार सम्मान' से नवाजा गया। समारोह चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित मां जोगणिया माता परिसर में आयोजित किया गया, जिसमें राजस्थान एवं अन्य राज्यों के साहित्यकार भी सम्मानित हुए। समारोह के मुख्य अतिथि उद्योगपति श्री श्रीनिवास मोदानी थे।

ज्ञातव्य है कि अभी तक डॉ. राजगोपाल की विभिन्न विधाओं में पांच कृतियां प्रकाशित हैं, जिनमें से दो को राजस्थान साहित्य अकादमी से प्रकाशन सहयोग मिला है। पुस्तकों में गज़ल संग्रह 'ज़ख्म' जब भी दो चार भरते हैं। दो दोहा संग्रह 'सभी लाइनें व्यस्त' एवं 'सबै भूमि गोपाल की', बाल कविता की 'छोटे बच्चे गोल मटोल' तथा मेवाड़ी में हास्य व्यंग्य लेखों की पुस्तक 'मोजर मूंछ्यां' हैं। इनकी रचनाएं देश विदेश की पत्रिकाओं तथा संकलनों में स्थान पाती रहती हैं। इनको पूर्व में भी कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। गजल व दोहा इनकी प्रिय विधा है। वे उदयपुर के आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज में आचार्य के पद पर कार्य करते हुये साहित्य सृजन में भी योगदान कर रहे हैं।

कमर मेवाड़ी को साहित्य प्रतिभा पुरस्कार

राजसमंद/झुंझुनूं. डूण्डलोद विद्यापीठ (झुंझुनूं) की स्थापना दिवस के अवसर पर 12 अक्टूबर 2019 को विद्यापीठ सभागार में राजसमंद के वरिष्ठ साहित्यकार कमर मेवाड़ी को श्रीमती शारदा रमाकान्त शर्मा स्मृति साहित्य प्रतिभा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार के अंतर्गत शॉल, चांदी का श्रीफल, अभिनंदन पत्र व 21 हजार रुपए नकद राशि भेंट कर मेवाड़ी को नवाजा गया।

राजस्थान साहित्यकार परिषद कांकरोली के अध्यक्ष राधेश्याम सरावगी मसूदिया ने बताया कि पुरस्कार समारोह में मेवाड़ी ने उद्बोधन व शेख अब्दुल हमीद ने अपनी गजलों के माध्यम से समारोह को ऊंचाईयां प्रदान की। स्वागत उद्बोधन डूण्डलोद विद्यापीठ के मुख्य सलाहकार रमाकांत शर्मा ने दिया, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता कथाकार एवं अक्सर पत्रिका के सम्पादक डॉ. हेतु भारद्वाज ने की।

मुख्य अतिथि प्रो. रोशन जैन महात्मा, प्रमुख वक्ता महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व प्रोफेसर डॉ. सूरज पालीवाल थे। अंत में डूण्डलोद विद्यापीठ सचिव मुकेश पारीक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

"SHREE" Tension®
SHOWROOM
Manufacturer & Wholesaler of Jeans & Shirt
शॉप नं. 2, कावड़िया हॉस्पीटल के पास
100फीट रोड, राजसमन्द (राज.)
Mob. 8769955630, 7230059101
धमाका ऑफर
लोग सस्ता कहते हैं, हम सस्ता देते हैं....
ब्राण्डेड शर्ट 1 पीस ₹ 299 में
ब्राण्डेड जीन्स 1 पीस ₹ 499 में

एक बैलगाड़ी के बाद 37 बसों के मालिक बने श्री कन्हैयालाल ठाकुर

श्री जमनादासजी ब्रजवासी ठाकुर के घर श्रीमती भुरी बाई की कोख से 29 अगस्त 1910 में देवाली गांव में श्री कन्हैयालाल का जन्म हुआ। गांव में ही अपना बाल्यकाल व्यतीत कर जब कुछ बड़े हुए ही थे कि पिता श्री जमनादास का असमय ही महामारी से स्वर्गवास हो गया। उसी कारण उन्होंने दोनों बड़े भाईयों के साथ आप परिवार सहित कांकरोली अपने मूल निवास स्थान पर आ गए। फिर कन्हैयालाल अपने भाई बिहारीलाल के साथ मिलकर ट्रावेल्स व्यवसाय को ऊंचाईयां प्रदान की।

बचपन से ही अभावों से जुझते, संघर्ष करते मेहनत और मजदूरी को अपना हथियार बना जीवन संघर्ष में कूद पड़े। कई छोटे-मोटे काम किए। श्री द्वारकाधीश मन्दिर में नौकरी की, तांगा चलाया और बैलगाड़ी से गांव गांव माल को ढोया। गुजरात, सुरत में 12 वर्ष तक ड्राईवरी सीख कर बस चलाने का काम किया और जब सुरत (गुजरात) से कांकरोली लौटे, तो नाथद्वारा में ड्राईवर की नौकरी कर वहीं किराये का मकान लेकर जीवन यापन करने लगे। पर कहते हैं समय कभी एक साथ नहीं रहता। सदा शांत और शालीन रहने वाले इस व्यक्तित्व में अचानक एक विचार कौंधा और उन्होंने अपने भाई बिहारीलालजी के साथ कुछ विश्वसनीय साथियों श्री बच्चुभाई लोहार, श्री शिषुजी भेंटिया, रंगलालजी खमेसरा, श्री हरिभाई आदि के सामने प्रस्ताव रखा कि अगर हम सब मिलकर कुछ पैसों का इंतजाम करें और एक मोटर बस ले आए, तो चला मैं खुद लूंगा और ईश्वर ने चाहा तो हमारा काम चल निकलेगा। सभी साथियों ने मिलकर इस योजना को आगे बढ़ाया और एक बस कांकरोली से नाथद्वारा के लिए शुरू की। सही नियत और ईमानदारी के साथ कठोर परिश्रम से किया काम सदैव सफल ही रहता है। काम चल निकला और जल्दी ही दूसरी एक और बस कांकरोली से गंगापुर के लिए उन्होंने शुरू कर दी। उसके बाद तो लक्ष्मी मेहरबान हो गई और शीघ्र ही तीसरी बस कांकरोली से रायपुर, चिताम्बा के लिए उन्होंने प्रारम्भ कर दी। इसी तरह कांकरोली से चारभुजा, कांकरोली से आमेट देवगढ़ और फिर उदयपुर, फालना, सांडेराव तक सभी बसें चलने लगी। तभी उनकी इस सफलता को देखकर कई लोग उनसे इस कारोबार में मदद व पैसा लगाने को तैयार हो गए। उस समय श्री अल्लाबेली रंगरेज जो उस समय कांकरोली में पैसे वालों में गिने जाते थे। उन्होंने भी अपना पैसा उसमें लगाया और दो बसें चित्तौड़ से प्रतापगढ़ के लिए उन्होंने प्रारम्भ कर दी।

जब बसों की संख्या बढ़ी, तो उन्होंने टैक्सी मोटर एसोसिएशन का नाम दिया और संभाग में ही नहीं, अपितु संभाग के आस-पास के कई संभागों में टैक्सी मोटर ऐसोसिएशन का नाम मशहूर हो गया। एक समय ऐसा भी आया टैक्सी मोटर एसोसिएशन में 37 बसें विभिन्न मार्गों पर चलने लगी। कांकरोली से गंगापुर, गंगापुर से भीलवाड़ा, भीलवाड़ा से अजमेर और अजमेर से जयपुर तक आपका लिंक बैठ गया।

उस समय उदयपुर में जयपुर निवासी श्री नन्दा साहब का ग्रीन रोडवेज बस का कार्य भी बड़े जोर शोर से चल रहा था। वे अपना वर्चस्व बनाए हुए थे, तभी उन्होंने अपने बुद्धि कौशल के बल पर ग्रीन रोडवेज की समस्त बसें व परमिट एक मोटी रकम के साथ खरीद ली और पूरे संभाग में हलचल मचा दी।

पर लगभग एक हफ्ते के अंदर ही नन्दा साहब के परिजन उनसे मिलने आए और श्री कन्हैयालाल से विनती की कि हमने भूलवश और बिना सोचे समझे ये सौदा कर दिया। हमारा तो काम ही सब खत्म हो जाएगा। आप कृपा कर आपकी रकम ले लें और हमारा सारा काम हमें वापस सौंप दें। इसके एवज में हम एक बस और भीलवाड़ा संभाग के सभी परमिट आपको दे देंगे। आपने बिना समय गवांए एक दम से हां भर दी और नन्दा साहब को एग्रीमेन्ट हंसते हंसते लौटा दिया और अपनी उस रकम को खेती बाड़ी की जमीन खरीदने, सिनेमा हाउस खरीदने और पेट्रोल पम्प खरीदने में लगा दिया।

इनका जीवन सरल, सादा और आडम्बर रहित था। इतना सब कुछ होते हुए भी उन्होंने अपने कभी बड़े होने या धनवान होने का दिखावा नहीं किया। एक आम आदमी की तरह अपना जीवन जीया। लोगों के सुख दुख में शामिल रहे। अपने परायों को कभी उनसे बड़ा होने का एहसास नहीं होने दिया। जिस चमत्कारी ढंग से उन्होंने इतना सब कुछ किया, उसी चमत्कारी ढंग से सब कुछ छोड़कर 18 जुलाई 1978 को आप स्वर्ग सिधार गए। आपके चार पुत्र श्री श्यामसिंह, श्री गिरधर गोपाल सिंह, श्री कमलसिंह व श्री भूपेन्द्रसिंह और तीन बेटियां थी, जिनमें से दो पुत्र व दो बेटियां आज भी पिता के नाम को जिन्दा रखे हुए हैं। उनके सुपुत्र श्री कमलसिंह ने अपने पिता के सपने को साकार करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ी और आज भी 20-21 बसों के साथ नीलकण्ठ ट्रावेल्स संस्थान संभालकर पिता का नाम जिन्दा रखे हुए हैं। मेरे गांव के ऐसे आदर्श संघर्षशील व्यक्तित्व को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि।

अफ़ज़ल खां अफ़ज़ल
जलचक्की कांकरोली
मो. 98284-75288

जीवन पतंग री डोर

जीवन पतंग री डोर
घणी मत तांण जै
आपणी क्षमता जापा
वगत पीछांण जै
टूट्या जासी- छूट
दूर वै जावसी
कुण जाणे आ पवन
कठै लै जावसी
राखो हाथां थाम
घणी मत ढील करो
ज्यादा ढीली डोर
मन उलझावसी
चालो वायरै चाल
अरै आणंद घणो
राखो हमजरी वात
सोच लोका तणो
धरम करम रौ लेखो
दाता लेवसी अर
जीये जतरो भाव
सबाने देवस
अरै आपो मन में राख
घणो उड़जे मती
ऊंचो घणो अनंत
परौ मत खोवजो
कोई नी वेला साथ
वात नै जाण जै
जीवन पतंग री डोर
घणी मत ताण जै।

दुर्गाशंकर यादव 'मधु'
कांकरोली

डळ झील
आत्म कथ्य

वादियों के दर्द की, मैं वह व्यथा हूं
जख्म से बहते लहू की, वह कथा हूं
जो रही नि:शब्द, खुद सहती रही मैं
चीड़ वन से बस, फकत कहती रही मैं
न किसी ने टोल ही, न ली कभी मेरी रजा
शहनशाहों की बनी पुतली, यही मेरी सजा
मैं तो बस ये जानती, मैं पर्वतों की धार हूं
झील हूं, नद हूं, फटिक मैं शीतल जल का सार हूं
कौनसी धारा बनी, शमशीर वाली धार की
ये सियासत और रियासत, अपने ही व्यापार की
इस हताशाओं, गहन अवसाद में
कोई तो कल्कि हुआ मेरे लिए
धर्म संस्थापन, हरण संताप को
साधुजन के त्राण, कृत बहुपाप को
मुक्त हूं, सानंद हूं, मैं अवनता हूं
वादियो के दर्द की, मैं वह व्यथा हूं
मैं नहीं जल संग्रहण की एक काया
संस्कृति के गीत गाए हैं मैंने
प्रेम पांती के सजल पन्नों पे मैंने
मेघदूती पंख लगवाए हैं मैंने
मैं हिमालय की सुला हूं और कश्यप की कृति भी
मैं हृदय की वेदना हूं, भाव की अनुपम प्रति भी
मैं उसी अधिकार की अब अर्हता हूं
वादियों के दर्द की मैं वह व्यथा हूं
अब पुन: कश्मीर हो, धरती की जन्नत
हम सभी की बस, यही तो कामना है
तो सुनो, संकल्प मेरा, यह न भूलो
देश का हाऊं मुकुट, यह भावना है
यत्र विश्व भवति नीड़म, देव भूमि संस्थिता हूं
वादियों के दर्द की मैं वह व्यथा हूं

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार व शिक्षाविद्
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 94602-52308

थोड़े दिन का मजा है

थोड़े दिन का मजा है
फिर जिन्दगी भर भुगतनी सजा है

ग्रहण करते रहते धुम्र को
संकट में ढालते प्राण को
मजे से खिंचते अपने मुख से
खंजर खंजर कर देते अपने अंग को
शुरुआत में लगता ये मजा है
फिर जिन्दगी भर भुगतनी सजा है

क्षणभर में खर्च कर देते धन को
फायदा न कुछ उन्हें मिलता
ऐसी लत उन पर छाई है
खतरे में अब पीढ़ी भावी है
कहते हैं जिन्दगी का ले रहे मजा है
फिर जिन्दगी भर भुगतनी सजा है

स्वयं मौत को बुलावा देते
कर्म ये ऐसा करके
खुद ही खुद की पीड़ा बन जाते
अपने अभिभावकों को धोखा देते
दो पल की जिन्दगी लगती मजा है
फिर जिन्दगी भर भुगतनी सजा है

आदी हो जाते इस लत के
नियन्त्रण अपना नहीं रख पाते
कीमती समय व्यतीत कर देते
करते रहते मनमानी अपनी
उनको लगता तनाव का ये इलाज है
फिर जिन्दगी भर भुगतनी सजा है

योगेन्द्र जीनगर
राजसमंद

आखिरी अस्पताळ, राजसमंद री पाळ

मौत, मुकदमा, मांदगी अर मंदो रुजगार।
चारूं मम्मा जद मले, समझो बंटाधार।।

आ केणावत मुं नेनपणाऊं हुणतो आय रियो हूं। पण अणी रो अरथ म्हारे हमझ में अबे आवा लागो। मुं तो बालपणे सूं लेर पढ़वा- लिखवा री उमर तक कांकरोली रे बारे म्हारा माय बापू रा लेर कदी मेणिया, कदी फयावड़ी अर कदी चार चार मीना तक निझरणा रा मगरा में गायां चरावतो भमतो रेतो हो। म्हारो रेण- सेण हादो, खाणो-पीणो दूध-छाछ- राबड़ी रो हो। मांदगी म्हारा बालपणा में कदी नी देखी। मक्की अर गेऊं री रोट्या, कांदा अर चील री भाजी, चटणी खावता, पण दूध घर री गायां रो असली पीवाने मलतो हो।

जद मुं नवीं- दसवीं क्लास में भणतो तो परभाते वेगो अंधारे अंधारे निझरणा री खड़क सूं निकल अवाणे पगा तीन कोस (10 किमी. दूरी) चालीन कांकरोली रा मोटा अस्कूल में भणवा आतो हो अर दन री एक वज्यां दपेर वेता पाछो खड़क में जाईन रोट्या खातो हो। पछे हुवतो नी हो। मंगरे जावतो अर वीड़ा में बोर, गांगड़ा अर डारां खावतो हांज वेला रो खड़क में आतो अर थाको थको हुई जावतो। म्हारी मां म्हने जगाईन ऊनो- नवायो दूध पाईन पाछो हुवाई देती। हांजे रोटी तो कदीक खावतो, पण दूध तो मुं रोज पीवतो हो। म्हारा बापु मंगराऊं मोड़ा आवता, जणाऊं मुं तो परभाते हीइज मळणो वेतो।

सन् 1961 रा दिसम्बर महीना में म्हारी पेली मास्टर री नौकरी, राजनगर रा लालूरामजी रा अस्कूल में लागी अर सन् 1997 रा अपरेल महीना में म्हारो रिटायर रो हुकम वेई गियो। वणी दनां में मुं राजसमंद झील री एरिगेशन पाळ माथे घुमवा लागो। आज म्हने बाइस बरस पाळ घुमता वेई ग्या। परभाते अर हांजे दोई दाण घुमवा जाणो अर साथ्यां रे हाथे कविता, पाठ व राप्यां हांकणी। योग, आसन, प्राणायाम परभात वेला में हाऊ रेवे। 11 बरस पेला एक ध्यान उपवन लगायो। वठे घुमवा में चार तरे रा लोग लुगायां आवे। पेलां तो प्रकृति प्रेमी, दूजा टाबरां ने हींदावाणो अर मगरमछ रो वणियोड़ो रूप वतावा वाला, तीजा व्हे नवां छोरा- छोरिया अर मोट्यार जणां ने वठे वातां करवा रो एकांत ठोर ठिकाणो मल जावे, व्हे आवे। अबे रीया चौथा नम्बर पे मांदा, बूढा- ठाड़ा अर उमर सूं थाकां मनख- लुगायां, जणा ने डॉक्टर लिखे ने दीदो के, अबे आपरे आखरी अस्पताल तो राजसमंद री पाळ है, जठे घुमो अर डायबीटीज अर हार्ट अटैक ऊं वंचो।

घणा खरा डायबीटीज रा मरीज परभाते आइन हेंग कंवला नीमड़ा री कोंपळा अर पाना ने सूटीन खावता रेवता। कोई सदर सुहागल रा फूल खावे, तो कोई सीसम रा पाना, तो कोई मनमरजी ऊं नीम हकीम रा बताया केण में चाले। कोई दौड़े, तो कोई फां फूं करीन फेफड़ा धड़कावे, तो कोई नगर परिषद रा लगायोड़ा जीम पे झूला खावे, आपणा कुल्हा मटकावे अर कसरत करे।

म्हने लागो के मांदा लोगां रो आखरी अस्पताल अबे या राजसमंद री पाळ हीज है। जठे शुद्ध हवा अर वातावरण मले। म्हारी आप ऊं या अरज है के, 10 बरस री उमर वदावणी व्हे तो आप अठे राजसमंद झील री पाळ पे एरिगेशन पधारी जावे।

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
वरिष्ठ साहित्यकार, कांकरोली

दीपावली के पावन पर्व पर समस्त
राजसमंद वासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हेमन्त गुर्जर

समाजसेवी, राजसमंद

मो. 94607-25959

दीपावली के पावन पर्व पर समस्त
राजसमंद वासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

asianpaints

एशियन पेंट्स एण्ड हार्डवेयर

पालीवाल मार्केट के सामने
जलचक्की रोड,
कांकरोली राजसमंद
मो. 9829923900
77371-44655

ज्योति पर्व
दीपावली
की समस्त
जिलेवासियों
को हार्दिक
बधाई
एवं शुभकामनाएं

नानालाल सार्दुल

अध्यक्ष

जिला मार्बल कटर एसोसिएशन-राजसमंद

राजस्थान पत्रिका,
दैनिक भास्कर के साथ सभी
अखबारों में विज्ञापन
प्रकाशित कराने का एकमात्र स्थान
शक्ति
एडवरटाइजिंग

सभी
प्रकार की
खेलकूद
सामग्री
मिलने का
राजसमंद
में एकमात्र स्थान

शक्ति स्पोर्ट्स

शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
94142-39648, 94144-73275

जयवर्द्धन
की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में
सम्पर्क : 94142-39648

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
आओ... हम सब मिलकर... पन्नाधाय, महाराणा प्रताप निर्मल मेवाड़ बनाएं
पर्यावरण
संस्कृति
संस्कार
शिक्षा
रोजगार
आशापुरा मानव कल्याण ट्रस्ट
JAI ASHAPURA
HYDRAULIC LIFTS
वापी (गुजरात)/राजसमन्द (राजस्थान)
जन्मस्थली : लक्खाजी की भागल, गांव-मादरेचों का गुड़ा, कालिंजर, पं.सं. कुंभलगढ़, जिला-राजसमंद
कर्मस्थली : शॉप नं. 4, त्रिवेणी अपार्टमेंट, जय श्री टॉकीज के पीछे चला रोड़, वापी, जिला-वलसाड़ (गुजरात)
सम्पर्क : 02602465890, 09924100227, 7727047121, 9824186890
www.ashapuramanavkalyantrust.com,
Email : ashapuramanavkalyanseva@gmail.com
नानजी भाई गुर्जर -अध्यक्ष एवं संस्थापक
सबका साथ, गांव का विकास
हमारा पर्यावरण, हमारी जिम्मेदारी
एक पेड़, एक जिन्दगी। पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ।

प्रकाश पर्व दीपावली की शुभकामनाएं
JK Marble
Leading Marble Mines of the World
Arora's J.K. Natural Marbles Ltd.
Morwar Rajsamand, Rajasthan - 313324

ज्योति पर्व दीपावली की समस्त जिलेवासियों को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
बॉयज, गर्ल्स एंड मेन्स वेयर
कुं. लालसिंह राठौड़
ठि. बागोटा (सांगठ कला)
श्री भैरूनाथ कलेक्शन
फव्वारा चौक, मैन रोड, बस स्टैंड राजनगर मो. 9602427200

दीपोत्सव की
समस्त जिलेवासियों
को हार्दिक
शुभकामनाएं
गोवर्धनलाल खटीक
साकरोदा
शम्भुलाल खटीक
साकरोदा
करधर कन्स्ट्रक्शन, साकरोदा

जे.के. टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेके ग्राम, कांकरोली (राज.)
दीपावली के मंगल पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं।
ये नूतन वर्ष आपको सुख
और समृद्धि से परिपूर्ण करें।
JK TYRE
& INDUSTRIES LTD.

शक्ति स्पोर्ट्स
एक ही जगह पर
सभी तरह की खेलकूद सामग्री
मिलने का एकमात्र स्थान
जेके मोड़, शास्त्री मार्केट, कांकरोली
जिला राजसमंद, 9414473275, 94142-39648

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त पंचायत समिति सदस्यगण

श्रीमती रीना कुमावत	भरत पालीवाल	भुवनेश्वरसिंह चौहान
प्रधान	उप प्रधान	विकास अधिकारी

-: आम जनता से अपील :-

◆ जन्म मृत्यु व विवाह का पंजीयन अवश्य करवाएं। ◆ बिजली व पानी बचाएं व ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाऐं। ◆ भामाशाह एवं प्रधानमंत्री जनधन योजना का लाभ उठाएं। ◆ वर्षा के जल की बूंद-बूंद संग्रहित करें। ◆ गांव को साफ-सुथरा बनाएं एवं पॉलिथीन का प्रयोग न करें। ◆ जल की बचत अधिक उपज ◆ कूड़ा-करकट कचरा पात्र में ही डालें, गांव को साफ सुथरा बनाऐं। ◆ पूरे गांव को जल विषय पर आत्मनिर्भर बनाना। ◆ हम सब हैं साथ, जल ग्रहण विकास अब अपने हाथ। ◆ खुले में शौच ना करें व शौचालय का बनाकर उसका नियमित उपयोग करें।

कार्यालय पंचायत समिति राजसमंद

दीपावली की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

रवि शर्मा	मनीष देवपुरा	रजनीश वागरेचा
अध्यक्ष	महासचिव	कोषाध्यक्ष

एवं समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण

मार्बल गैंगसा एसोसिएशन राजसमंद

कुं. देवीसिंह चुण्डावत
ठि. बागुंदड़ा

दीपोत्सव की समस्त जिलेवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

माँ चामुण्डा कलेक्शन

संपर्क : 9784843646, 8949539350

शर्ट, टी-शर्ट, जीन्स, ट्राउजर, ब्रिजीश, हटिंग शर्ट, धोती-कुर्ता, स्कूल ड्रेस, स्कूली बैग एवं अण्डर गारमेन्ट्स के विक्रेता

Cmm Group

माँ चामुण्डा मार्बल

संपर्क : 9079023385, 9950709746, 9829984934, 9983507150

स्पेशलिस्ट : जे.के., निर्झरना

नेशनल हाइवे 8 मोरचना, जिला-राजसमंद

सभी प्रकार के मार्बल स्लेब्स व टाईल्स सप्लायर्स

अनन्ता अस्पताल

AIMS

नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

नि:शुल्क परामर्श | नि:शुल्क जांचे | नि:शुल्क भर्ती | नि:शुल्क ऑपरेशन | नि:शुल्क दवाईयां

नि:शुल्क ऑपरेशन

- हर्निया
- फ्रेक्चर
- अपेंडिक्स
- हाइड्रोसिल
- पाईल्स
- फिस्टूला
- फिशर
- पित्त की थैली की पथरी
- ओवेरियन सिस्ट
- कान के पर्दे का ऑपरेशन
- छोटी–मोटी गांठों का ऑपरेशन
- मवाद या पुराना घाव (नासूर आदि)
- नाक की टेढ़ी हड्डी का ऑपरेशन
- बच्चेदानी निकालना
- सामान्य एवं जटिल प्रसव की सुविधा
- बच्चेदानी में गाँठ हो
- डी.एन.सी.
- मोतियाबिंद, आँखों की झिल्ली की सफाई

नि:शुल्क परामर्श, जांच एवं भर्ती सुविधा

जनरल मेडिसिन
मलेरिया, डेंगू, पीलिया, टाईफाईड, सर्दी–जुखाम, एवं अन्य रोगों व मौसमी बीमारियां

चर्म रोग
चेहरे पर झाईयां एवं कील, मुंहासे,चेहरे पर खाड्डों, बालों के झड़ने का PRP थैरेपी, Nail Surgery, Cryo-Surgery

टीबी एवं चेस्ट
खांसी या बलगम में खून आता है भुख कम लगती है, बिना वजह वजन कम हो रहा है, 1 महीने से ज्यादा समय से बुखार है, कमजोरी है व गले के पास सूजन है

मनोचिकित्सा
सभी प्रकार के मानसिक रोग एवं विकार, डिप्रेशन, मानसिक विकार या मेंटल हेल्थ डिसऑर्डर, अकेले रहने की आदत हो।

बाल एवं शिशु रोग
टीकाकरण सुविधा, वेल बेबी क्लिनिक, कुपोषित एवं अत्याधिक कुपोषित बच्चों इलाज, हाई रिस्क फोलोअप क्लिनिक, बच्चो के साधारण एवं गम्भीर रोग का उपचार

* गहन चिकित्सा ईकाई (ICU) की सुविधा रियायती दर पर * इम्प्लांट अतिरिक्त

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अन्तर्गत अधिकृत अस्पताल | राजस्थान सरकार के सेवारत कर्मचारियों एवं पेंशनर्स के लिये अधिकृत अस्पताल | ESIC से अधिकृत अस्पताल | सभी प्रमुख TPA

अनन्ता हिल्स, N.H. 8, तह. नाथद्वारा, जिला–राजसमन्द–313202 | सम्पर्क सुत्र : 8875166990, 9783305082, 9772278635

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला–राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To